

KALIDASA

ABHIJNANASAKUNTALAM

अथ

श्रीकालिदासविरचितमभिज्ञानशकुन्तलम्

नाम नाटकम्

1846

Bonnæ



180Nb87-3

1 1 1 1 1 1

अथ
प्राकृतभाषाव्याख्या

XII E.65

भा. मी. नृपणा चरति पवित्रं भा. कविर्मा च कविः

भा. कविर्मा चरति पवित्रं भा. कविर्मा च कविः

भा. नृपणा चरति पवित्रं भा. कविर्मा च कविः

* अत्यन्ताभिः प्रसन्नैर्नृपैश्चतु अस्तामिहृष्टमिहृष्टः ॥ १ ॥

भा. नृपणा

भा. नृपणा

सुत्रभाः ॥ अर्थः ॥ अर्थः ॥ अर्थः ॥ अर्थः ॥ अर्थः ॥

नृपणा चरति पवित्रं भा. कविर्मा च कविः

भा. नृपणा

नृपणा चरति पवित्रं भा. कविर्मा च कविः

सुत्रभाः ॥ अर्थः ॥ अर्थः ॥ अर्थः ॥ अर्थः ॥ अर्थः ॥

* नृपणा चरति पवित्रं भा. कविर्मा च कविः

सुत्रभाः ॥ अर्थः ॥ अर्थः ॥ अर्थः ॥ अर्थः ॥ अर्थः ॥

भा. नृपणा चरति पवित्रं भा. कविर्मा च कविः

अत्यन्ताभिः प्रसन्नैर्नृपैश्चतु अस्तामिहृष्टमिहृष्टः ॥ २ ॥

सूत्र १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

सूत्र २ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

सूत्र ३ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

सूत्र ४ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

सूत्र ५ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

सि

सूत्र ६ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

सूत्र ७ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

सूत्र ८ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

सूत्र ९ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

सूत्र १० ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

सूत्र ११ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

सूत्र १२ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

सूत्र १३ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

सूत्र १४ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

सूत्र १५ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

सूत्र १६ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

सूत्र १७ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

सूत्र १८ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

सूत्र १९ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

सूत्र २० ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

सूत्र २१ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

तत्संस्थु कृतसंस्थान् प्रोक्तसंस्थान् ॥ १५५ ॥

अर्त्तिजायमानं च ॥ १५६ ॥ ॥ १५७ ॥

रक्षा । एष प्रोक्तसंस्थान् ॥ १५८ ॥

वैष्णवम् । सदायमानं प्रोक्तसंस्थान् ॥ १५९ ॥

अथ प्रोक्तसंस्थान् ॥ १६० ॥

प्रोक्तसंस्थान् ॥ १६१ ॥

रक्षा । एष प्रोक्तसंस्थान् ॥ १६२ ॥

॥ १६३ ॥

प्रोक्तसंस्थान् । रक्षा । सदायमानं प्रोक्तसंस्थान् ॥ १६४ ॥
 प्रोक्तसंस्थान् । रक्षा । सदायमानं प्रोक्तसंस्थान् ॥ १६५ ॥
 प्रोक्तसंस्थान् । रक्षा । सदायमानं प्रोक्तसंस्थान् ॥ १६६ ॥

॥ १६७ ॥

प्रोक्तसंस्थान् । रक्षा । सदायमानं प्रोक्तसंस्थान् ॥ १६८ ॥

॥ १६९ ॥

प्रोक्तसंस्थान् । रक्षा । सदायमानं प्रोक्तसंस्थान् ॥ १७० ॥
 प्रोक्तसंस्थान् । रक्षा । सदायमानं प्रोक्तसंस्थान् ॥ १७१ ॥

प्रोक्तसंस्थान् । रक्षा । सदायमानं प्रोक्तसंस्थान् ॥ १७२ ॥
 प्रोक्तसंस्थान् । रक्षा । सदायमानं प्रोक्तसंस्थान् ॥ १७३ ॥

॥ १७४ ॥

प्रोक्तसंस्थान् । रक्षा । सदायमानं प्रोक्तसंस्थान् ॥ १७५ ॥
 प्रोक्तसंस्थान् । रक्षा । सदायमानं प्रोक्तसंस्थान् ॥ १७६ ॥

॥ १७७ ॥

प्रोक्तसंस्थान् । रक्षा । सदायमानं प्रोक्तसंस्थान् ॥ १७८ ॥

23

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

१० : प्रजापतिर्नामः तृतीयः पर्वः ॥

इतिहासः एवम् अस्ति यत् एतत् 'अ-स-स-स' ॥ १ ॥

यात्रदिनां हाराणां च पालयः-वर्षात् ॥ ३॥ ॥ ॥ ॥

[illegible]

शुभलाभा । इति उक्तं सर्वथा ।

अनसूया । कृपा मन्दतः । तुवहावि तावकमपि प्रमाद
रुपमा । अद्वयं न संकुमि । ताम् पाप्मानिश्चान्मुमयन् । अहं तम
एतायां प्राप्तावन्तवृत्तं गिरेत् ।

अकृतत्वा । तत्रैवेत्येवं तादृशोक्त्यां दृश्यम् । अतएव ते माद-
मिणोक्तौ च दृश्यम् । तं च । तत्रैवेत्येवं

राजा । अत्यन्तं ना कामदर्शिता । अशुभं जीवन् नृपतया ।
न्याय्यम् । अ इत्येवाप्यस्य निम्नम् ।

[illegible]

॥ गायः नमः भगवते नमः ॥

भुवं ग नीलोत्तमपुत्रवार्ध्वा

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

भवति । पादप्रातरित एव निश्चयं तावदना पञ्चमि । २६ ॥ ॥

अकाम्पल । मन्त्रि अगाम्पल । आदोऽपान्द्राय न कृतेषा पिअंयदाह
पिअंयदाह । आदोऽपान्द्राय न कृतेषा पिअंयदाह

SECRET 145 100 200

प्रियवन्त । इमं पत्रं पठ्यते तदा तदा अस्माकं वाच्यं भवेत्
तदा । यं ते वाच्यं भवेत् ।

राजा । सभ्यमिगमात् ।

इदमुपनिषत्सामान्यमिति ॥ १० ॥

अथ उपनिषत्सामान्यमिति ॥ ११ ॥

अथ उपनिषत्सामान्यमिति ॥ १२ ॥

कुमुदमिव विन्दत पतन्त्यमरादृशम् ॥ १३ ॥

नाममनन्यत्रापि यमगो दत्तम् । न पुनरुत्पत्तिरिति ॥ १४ ॥

शरीरमननायुक्तं प्रत्यक्षमिति ॥ १५ ॥

मन्त्रिणमपि विदितं नैव न्यूनम् ॥ १६ ॥

राममिव मन्त्रिणः प्रत्यक्षमिति ॥ १७ ॥

अथ उपनिषत्सामान्यमिति ॥ १८ ॥

अथ उपनिषत्सामान्यमिति ॥ १९ ॥

अथ उपनिषत्सामान्यमिति ॥ २० ॥

अथ उपनिषत्सामान्यमिति ॥ २१ ॥

अथ उपनिषत्सामान्यमिति ॥ २२ ॥

अथ उपनिषत्सामान्यमिति ॥ २३ ॥

अथ उपनिषत्सामान्यमिति ॥ २४ ॥

अथ उपनिषत्सामान्यमिति ॥ २५ ॥

अथ उपनिषत्सामान्यमिति ॥ २६ ॥

कृता । रमणीश्वरु कान्त इगभा लदापाश्वनिदुषासु वदयत ।
रावृत्तो । एतदुसमस्तोत्थगा तगजोसिगां । अदयवचनो उदयमा-
कृता सक्तआरं । नि पादो ॥ २१ ॥

प्रियंवदा । अनासु । आणामि । किं सन्दत्ता वनापश्या
अदिभन पदार्थित ।

अयसुधा । गान् विभाविति । कहोदे ।

पिगवरा । अद वनापश्या अयसुधा रायवरा पदार्थित ।
गान् अद्वे अद्वे अत्तागा अयसुधे वरं लदेयति ।

अकृता । इमो गान् मुह अत्तागा गान् अद्वे । इमो ॥ २२ ॥

इति । अपि नाम कृतापतेरियमावर्गान्नित्रसंभवा स्यात् । अय
वा कृता मन्दकन ।

अमंशवे लज्जागिर्यकृता

गान् अमंशवे लज्जागिर्यकृता ग म मन् ।

सतां किं स ददपदम् वरापु ।

अमंशवे लज्जागिर्यकृता ॥ २३ ॥

नयति । अतः कृतापतेरियमावर्गान्नित्रसंभवा स्यात् ।

अमंशवे लज्जागिर्यकृता गान् अमंशवे लज्जागिर्यकृता गान् अमंशवे लज्जागिर्यकृता ॥

अमंशवे लज्जागिर्यकृता गान् अमंशवे लज्जागिर्यकृता गान् अमंशवे लज्जागिर्यकृता ॥

इति । अतः

अमंशवे लज्जागिर्यकृता गान् अमंशवे लज्जागिर्यकृता गान् अमंशवे लज्जागिर्यकृता ॥

अमंशवे लज्जागिर्यकृता गान् अमंशवे लज्जागिर्यकृता गान् अमंशवे लज्जागिर्यकृता ॥

अमंशवे लज्जागिर्यकृता गान् अमंशवे लज्जागिर्यकृता गान् अमंशवे लज्जागिर्यकृता ॥

अमंशवे लज्जागिर्यकृता गान् अमंशवे लज्जागिर्यकृता गान् अमंशवे लज्जागिर्यकृता ॥ २४ ॥

အကျဉ်းချုပ်အားဖြင့် အောက်ပါအတိုင်း ဖြစ်ပေါ်ခဲ့ပါသည်။

गर्भे भूयः प्रसूतः सः

พลา.ศ. ฉบับพิเศษฉบับที่ ๑

सामान्य, अथवा विशेष

"ਭਗਤਗੁਰੂਗੋਤਰਿ ਜੀ ਜੀਅ ਭਰਾ ॥ ੨੪ ॥

अथर्ववेदः । ३० अथर्ववेदः । ३० अथर्ववेदः । ३० अथर्ववेदः । ३० अथर्ववेदः । ३०

1967-1968 1968-1969 1969-1970 1970-1971 1971-1972 1972-1973 1973-1974 1974-1975 1975-1976 1976-1977 1977-1978 1978-1979 1979-1980 1980-1981 1981-1982 1982-1983 1983-1984 1984-1985 1985-1986 1986-1987 1987-1988 1988-1989 1989-1990 1990-1991 1991-1992 1992-1993 1993-1994 1994-1995 1995-1996 1996-1997 1997-1998 1998-1999 1999-2000 2000-2001 2001-2002 2002-2003 2003-2004 2004-2005 2005-2006 2006-2007 2007-2008 2008-2009 2009-2010 2010-2011 2011-2012 2012-2013 2013-2014 2014-2015 2015-2016 2016-2017 2017-2018 2018-2019 2019-2020 2020-2021 2021-2022 2022-2023 2023-2024 2024-2025 2025-2026 2026-2027 2027-2028 2028-2029 2029-2030 2030-2031 2031-2032 2032-2033 2033-2034 2034-2035 2035-2036 2036-2037 2037-2038 2038-2039 2039-2040 2040-2041 2041-2042 2042-2043 2043-2044 2044-2045 2045-2046 2046-2047 2047-2048 2048-2049 2049-2050 2050-2051 2051-2052 2052-2053 2053-2054 2054-2055 2055-2056 2056-2057 2057-2058 2058-2059 2059-2060 2060-2061 2061-2062 2062-2063 2063-2064 2064-2065 2065-2066 2066-2067 2067-2068 2068-2069 2069-2070 2070-2071 2071-2072 2072-2073 2073-2074 2074-2075 2075-2076 2076-2077 2077-2078 2078-2079 2079-2080 2080-2081 2081-2082 2082-2083 2083-2084 2084-2085 2085-2086 2086-2087 2087-2088 2088-2089 2089-2090 2090-2091 2091-2092 2092-2093 2093-2094 2094-2095 2095-2096 2096-2097 2097-2098 2098-2099 2099-2100 2100-2101 2101-2102 2102-2103 2103-2104 2104-2105 2105-2106 2106-2107 2107-2108 2108-2109 2109-2110 2110-2111 2111-2112 2112-2113 2113-2114 2114-2115 2115-2116 2116-2117 2117-2118 2118-2119 2119-2120 2120-2121 2121-2122 2122-2123 2123-2124 2124-2125 2125-2126 2126-2127 2127-2128 2128-2129 2129-2130 2130-2131 2131-2132 2132-2133 2133-2134 2134-2135 2135-2136 2136-2137 2137-2138 2138-2139 2139-2140 2140-2141 2141-2142 2142-2143 2143-2144 2144-2145 2145-2146 2146-2147 2147-2148 2148-2149 2149-2150 2150-2151 2151-2152 2152-2153 2153-2154 2154-2155 2155-2156 2156-2157 2157-2158 2158-2159 2159-2160 2160-2161 2161-2162 2162-2163 2163-2164 2164-2165 2165-2166 2166-2167 2167-2168 2168-2169 2169-2170 2170-2171 2171-2172 2172-2173 2173-2174 2174-2175 2175-2176 2176-2177 2177-2178 2178-2179 2179-2180 2180-2181 2181-2182 2182-2183 2183-2184 2184-2185 2185-2186 2186-2187 2187-2188 2188-2189 2189-2190 2190-2191 2191-2192 2192-2193 2193-2194 2194-2195 2195-2196 2196-2197 2197-2198 2198-2199 2199-2200 2200-2201 2201-2202 2202-2203 2203-2204 2204-2205 2205-2206 2206-2207 2207-2208 2208-2209 2209-2210 2210-2211 2211-2212 2212-2213 2213-2214 2214-2215 2215-2216 2216-2217 2217-2218 2218-2219 2219-2220 2220-2221 2221-2222 2222-2223 2223-2224 2224-2225 2225-2226 2226-2227 2227-2228 2228-2229 2229-2230 2230-2231 2231-2232 2232-2233 2233-2234 2234-2235 2235-2236 2236-2237 2237-2238 2238-2239 2239-2240 2240-2241 2241-2242 2242-2243 2243-2244 2244-2245 2245-2246 2246-2247 2247-2248 2248-2249 2249-2250 2250-2251 2251-2252 2252-2253 2253-2254 2254-2255 2255-2256 2256-2257 2257-2258 2258-2259 2259-2260 2260-2261 2261-2262 2262-2263 2263-2264 2264-2265 2265-2266 2266-2267 2267-2268 2268-2269 2269-2270 2270-2271 2271-2272 2272-2273 2273-2274 2274-2275 2275-2276 2276-2277 2277-2278 2278-2279 2279-2280 2280-2281 2281-2282 2282-2283 2283-2284 2284-2285 2285-2286 2286-2287 2287-2288 2288-2289 2289-2290 2290-2291 2291-2292 2292-2293 2293-2294 2294-2295 2295-2296 2296-2297 2297-2298 2298-2299 2299-2300 2300-2301 2301-2302 2302-2303 2303-2304 2304-2305 2305-2306 2306-2307 2307-2308 2308-2309 2309-2310 2310-2311 2311-2312 2312-2313 2313-2314 2314-2315 2315-2316 2316-2317 2317-2318 2318-2319 2319-2320 2320-2321 2321-2322 2322-2323 2323-2324 2324-2325 2325-2326 2326-2327 2327-2328 2328-2329 2329-2330 2330-2331 2331-2332 2332-2333 2333-2334 2334-2335 2335-2336 2336-2337 2337-2338 2338-2339 2339-2340 2340-2341 2341-2342 2342-2343 2343-2344 2344-2345 2345-2346 2346-2347 2347-2348 2348-2349 2349-2350 2350-2351 2351-2352 2352-2353 2353-2354 2354-2355 2355-2356 2356-2357 2357-2358 2358-2359 2359-2360 2360-2361 2361-2362 2362-2363 2363-2364 2364-2365 2365-2366 2366-2367 2367-2368 2368-2369 2369-2370 2370-2371 2371-2372 2372-2373 2373-2374 2374-2375 2375-2376 2376

परमेश्वर, मेरे प्रिय पिता, प्रार्थना करने के लिए मैं आपको धन्यवाद करता हूँ ।

ॐ । नमो भगवते वासुदेवाय । इत्येवमब्रवीत् । ॥

[illegible]

मता । अकाराणि जगत्पत्तम तद्वर्णनं । न मत्तं । ॥

३२७१ । शिवमात्र-प्रणिमतः । भक्तिः । भक्तिः । इति । तादृशेऽर्थः ।

ଅନୁସନ୍ଧାନ । ଯେଉଁଠି ଏହି ଶବ୍ଦ ଉପଲବ୍ଧ ଅଟେ ।

TEST 1 2000-2001

क. वाङ्मये प्रयुक्ता आर्थात् आर्थात्मिका संज्ञितानि ।

अथवाचस्पत्ययनस्य मन्थान्तरं तर्था-म-म ॥ १० ॥

[illegible]

अनास्था । अस्त । अथवा किंति असादि । २५ अं अथ

सदी महारंण अरिहृअभाणा वारुमिदा । ॥ ५॥ ॥ ॥ ॥

राज्ञा* : प्रा.प्र. तत्त्वविनिर्वाह मूर्तम् । अधि तप्य अधिना ।

1. የግልጽነት ስራ ስለሚባል ስራ ማለት ማለቱን ማረጋገጥና ማረጋገጥ

अगमयथा । तस्मिन् भविष्यति समस्तान्निभम् । कस्तो मन्त्रः । ॥ ३ ॥

उत्तर : श्रीमती अश्विनी अश्वराम । एवं प्रमाणित ।

राजा । अस्त्येतदन्यसमाधिभीरुत्वं ददायाम् ।

अनसूया । ततो वसन्तोदात्तमहं ते इच्छामि ।

२२ गीते । अनसूया विरमति ।

राजा । परस्तादवगम्यत एव । सर्वथापरः संशयः ।

अनसूया । अहम् ।

राजा । अयमवत ।

गान्धारीषु कथं वा स्यादस्य वृत्तस्य संभवः ।

न प्रमातरन्तं द्योतिरुदेति वसुधावतः ॥ २५ ॥

॥ शकुन्तलप्रसंगः ॥

राजा । आत्मनः । स्वभावकाशां न मुनीनाम् । किंतु साक्षात् प
रिहासाशक्त्या वरप्रार्थनां धृत्वा धृतिदोषभावकातरं मे मनः ।

प्रियंवदा । ममैव शकुन्तला विलासः । तवकांक्षया ते भूयाः । पुत्रांश्च वृत्त
रागांश्च विद्मः ।

॥ शकुन्तला विलासः ॥

राजा । ममगुपलक्षिता एव भवत्या । अग्नि नः सधरितश्च
पालोपादन्यदपि प्रदद्यात् ।

प्रियंवदा । अलं विद्यादिभिः । अग्निश्चक्षणापुत्राश्च तन्निष्कृष्टा
पानाः ।

राजा । सर्वो न क्षतिमिच्छामि ।

वैश्वानरं किमनया व्रतमा प्रदत्ता

द्यापाररोधि मदनस्य निपाथितव्यं ।

अत्यन्तमात्मसादृशत्वावहेतुभाभिः ॥

राजा निर्वन्त्यति समं करिणाङ्गनाभिः ॥ २६ ॥

॥

अनसूया । सान्द्रा दक्षिणं धम्मवाणिनी ।

१. शङ्कराचार्य प्रभुत्वान्तर्गत विचारः ।

भाष्यो । उपांशकात् त्रिगुणः । सन्ना सङ्कल्पे । नद् एवम्
अत्र नादा मणिदिदो भव ।

शक्यान्वा १ ग. १० । तदा वि. भ. १ ।

साध्याः । इमं ज्ञानिदम् अभ्यसात्वि आदित्यवर्गसं विदित्वां शशिमादि ।

शकुलाला । तम्हे अत्रेध । किंणि दिअए ससिअ मलय । गु
व्री वज्रणं सुणिमं ।

राज्ञा । त्रयगापे तावद्वतरी सार्यागत मृद्भाम् ।

माय्या । अहं । अणुमादो विग्रहं अन्धमप्याणा ।

राजा । भगवान्काश्यपः आश्वतं ब्रह्मणि स्थित इति प्रै तार्थं ।

उपे च व. सायो तदुभयोः सत्यमन्तु ।

अनन्ता । गुणाऽऽब्जः । अतिशयोक्तिः कोसिच्योति गोतणा
महेश्वरः महेश्वरः राक्षसः ।

राजा । अस्ति । श्रुयन्ते ।

अनमया* । तं गां पित्र्यभक्षोः प्रहृतं अन्वगच्छ । उदिकयाः
सारीर्यमवदृणाद्वाक् नानाकंसमन्वा सा पिता ।

राधा । उडिगाताशब्देन अनितं मे वौतूहलं । आ मृताच्छीतुमि
च्छामि ।

अनमूया । सुणाडु अज्ज्ञा । गौदगीतारै परा किल्ल तस्स राइ
सिणो उज्ज तवसि वदमाणस्म किंयि नादसइकिं देवविं माणा
एवम अचह्ण पामहा णिअनविग्घसाहिणी ।

राजा । अस्त्येतदन्यसमाधिभीतत्वं देवता ।

अनमृया । तदो वसन्तोऽश्वरागाह न उक्तादश्नथं वचं पवित्रम् ।

॥ २३ ॥ विरमति ।

राजा । परस्तादवगम्यत एव । सर्वथाऽसहसंभवेण ।

अनमृया । नैव ।

राजा । अथप्यतः ।

मानुषीषु कथं वा म्यादस्य वृषस्य संभवः ।

न प्रगातस्तं द्योतिरदति वसुधातस्तं ॥ २४ ॥

राजाऽन्वयापुत्री विरमति ।

राजा । अन्वयापुत्री । त्वन्वयापुत्री मं मुनीश्वरः । किंतु सन्वयापुत्री
रिक्तासाधुना वसुधातस्तं अन्वयापुत्री भवति भाववत्तारं मे मनः ।

प्रियंवदा । राक्षसाऽपुत्री । अन्वयापुत्री । अन्वयापुत्री भवति । पुत्राणि वृत्तु
नामा विद्य अन्वयापुत्री ।

॥ २५ ॥ राक्षसापुत्री विरमति ।

राजा । मय्यगुपन्निता इह भवत्या । अस्ति नः सद्यस्तिभवः
राक्षसापुत्रीदपि प्रदद्यात् ।

प्रियंवदा । अन्वयापुत्री । अन्वयापुत्री । अन्वयापुत्री भवति । पुत्राणि वृत्तु
नामा विद्य अन्वयापुत्री ।

राजा । राक्षसापुत्री । अन्वयापुत्री ।

वैश्वानरं किमनया वसुधा प्रदद्यात्

वैश्वानरं मदनस्य निपाद्यतव्यं ।

अत्यन्तमन्यामदृशत्वावहनाभि

राक्षसापुत्री विरमति सम कृतिगान्धनाभि ॥ २६ ॥

प्रियंवदा । अन्तः । अस्मन्तराणि परितः । यत्र प्राणि । अस्मात्
उत्तमं स आणुशान्तराणि संस्था ।

राजा । अन्तः । अन्तः । अन्तः । अन्तः ।

अन्तः । अन्तः । अन्तः । अन्तः । अन्तः ।

आशङ्कते यद्विं तदिदं लक्षणम् ॥ १० ॥

शकुन्तला । अन्तः । अन्तः । अन्तः । अन्तः ।

अनसूया । अन्तः । अन्तः । अन्तः । अन्तः ।

शकुन्तला । अन्तः । अन्तः । अन्तः । अन्तः । अन्तः ।

अनसूया । अन्तः । अन्तः । अन्तः । अन्तः । अन्तः ।

राजा । अन्तः । अन्तः । अन्तः । अन्तः । अन्तः ।

अनुगासन्मुनितनयां सहसा विनयनं वारिताप्रगल्भः ।
स्थानादनुसत्तनायि गन्तव्यं पुनः प्रतिनिवृत्तः ॥ ११ ॥

प्रियंवदा । अन्तः । अन्तः । अन्तः । अन्तः । अन्तः ।

प्रियंवदा । अन्तः । अन्तः । अन्तः । अन्तः । अन्तः ।

राजा । अन्तः । अन्तः । अन्तः । अन्तः । अन्तः ।

अस्तांसावतिमात्रलोहिततलीं व्याहृ धरांस्तेजपणी
दद्यापि स्तान्तेजपणं जनयति आस प्रमाणाधिकः ।

पति परिणतारुणप्रयादाः

शक्तममगृह इव प्रमदुने ॥ २९ ॥

अपि च ।

तीजापलाप्रतिज्ञातस्तन्धर्ममिवदलः

पादावटवतान्धर्ममसद्गतातपः ।

मूर्ति चित्तपदा इव नो भिन्नसामगृष्टा

धर्मरूपं प्राप्तिं गच्छः सत्त्वान्धर्ममिव ॥ ३० ॥

। मर्मा ॥ ३० ॥

राजा । अहो विदुः । पौरा असद्व्यभिचारस्यान्धमगुण
रुन्धन्ति । भवतु । प्रतिगान्धर्ममिवदलः ।

साम्यौ । अहो । इमिणा अहमव्युत्तनेन पञ्चाडलम् । अ
पुजापारिणो उटवगमपारस ।

राजा । गान्धर्मं गच्छतु भवत्यः । अयाप्याअमपीडा तथा न भवि
त्यति तथा प्रयतिप्यामहे ।

गर्भं नोदधत्

साम्यौ । अहो । असमावितादेहिमापुरि भूयावि प्रकृष्टाणमित्तं ।
तज्जमा अहो विगानिहे ।

राजा । मा मैवं । दर्शनेनैव भवतीनां परस्कृतो जस्मि ।

शकुलला । अणसू । अहिणवकसगुर्ह पारिकादे म चलपां ।
कुर्वअसाहापरिलगं च वकूलं । दव परिपालध म । नाव एं मां
आंधर्मि । इति त्पानमेमावलोअवन्ती सव्याजं विलग्न्य सव सलोभां निष्ठागता ।

राजा । मन्दौत्सुवयो जस्मि नगरगमनं प्रति । गावदनुगात्रिता
न्समेत्य नातिदूरं तपोवनस्य निवेशयेय । न खलु शक्ताय

शत्रुसत्ताव्यापाराद्वानं निवर्तयितुं । यम किं

मच्छति पुरः शरीरं, प्राचीनं ध्वङ्गस्तु न च ॥

चान्नांशकमिव कृताः प्रातिव्यातं नृपमानस्य ॥ ३३ ॥

। ३३ । व्याख्या २४ ।

॥ अथ भा ३३ ॥

॥ अथ विप्रश्नोक्तिः ॥

विप्रश्नः । विप्रश्नः । भो दिदृ । ॥ अथ विप्रश्नोक्तिः ॥
 वयसावावा विप्रश्नोक्तिः । अथ विप्रश्नः । अथ विप्रश्नः । अथ
 सद्गोति मद्रकाव विप्रश्नोक्तिः । अथ विप्रश्नः । अथ विप्रश्नः । अथ
 एडीअदि अडवीदो अडवीदो । पत्तभवत्कसायाणा कडुयाणा गिरिणा
 इवलाणि वीअनि । अणिअद्वेलं मृत्तममभरदा आरुसो अणदीअ
 दि । तुग्गाणुधावणव गिरिअणिगां रत्तिअम्वि विप्रश्नः सद्गोति
 ति । तदो मद्रते एव्य पभुरा वमोशुत्तकिं सडणित्दरुदं वण
 गदणासोवाकलेण पडिअधितीम्कि । एतएण दणिंवि पीरा ग
 णिकुमदि । तदो गणडस्म उव्वर विप्रश्नोक्तिः सवुत्ता । विप्रश्नः विप्रश्नः
 अम्हेसु अणदीणसु तत्तभवदो विप्रश्नोक्तिः अणमभद पविदस्म
 तावसकणाया सडन्दत्ता गाम मम अधागदए दंसिदा । संपदं पाअ
 रणभणस्स मणं कलेवि ग कलेदि । अज्जावि तस्स तं एव्य विप्रश्नः
 अन्तस्स अक्कीसु पभादं आसि । का गदो । ज्ञाव गं विदाचारय
 रिक्कं पेववामि । एत गं विप्रश्नोक्तिः । एसा वण्णासाणादत्थादि
 ज्ञाणादि वणपुप्फमात्ताभारिणीदि परिबुदो इदो एव्य आयक्किदि
 विप्रश्नोक्तिः । भोडु । अणगदविअत्तो विप्रश्नः भविअ चिदिस्सं ।

अहं हृदयं विरस्यं लक्ष्म्यं । १० । दयाकाङ्क्षया विरस्यं ।

। अहं प्रियं विरस्यं लक्ष्म्यं । १० ॥

राजा ।

काम प्रिया न सत्तया मनश्च तदावदर्शनायासि ।

अवन्तर्ग्यं जित् नो जनेन रतिभुज्यप्रार्थना कुरुते ॥ १० ॥

स्मिता कान्ता । एवमात्म्या विरस्यं लक्ष्म्यं विरस्यं लक्ष्म्यं ।

मन्यते । लक्ष्म्यं ।

विदुषः । विरस्यं लक्ष्म्यं लक्ष्म्यं लक्ष्म्यं लक्ष्म्यं ।

मातृ पत्न्यं नित्यं लक्ष्म्यं लक्ष्म्यं लक्ष्म्यं ।

मा मा इत्यवबुद्ध्या यदपि सा सा सगुणता गप्सी ।

मर्त्यं तत्किञ्च मत्परायणमहा कार्मी मर्त्यं । पश्यति ॥ ११ ॥

विदुषः । ॥ ११ ॥ लक्ष्म्यं । मा मा इत्यवबुद्ध्या यदपि सा सा सगुणता गप्सी ।

रति । ता व्याघ्राभक्षणं दीप्यावृत्तं ।

राजा । कुतो ज्य मात्रोपवातः ।

विदुषः । कदा किल सुखं अहं आउल्लोकादि अस्मिन्कारणं पृच्छसि ।

राजा । न विलम्बमगच्छामि ।

विदुषः । मा वयस्स । अं वेदसो पुद्गलात् विदुष्येदि । तं किं अत्ताणां प्रकाशेण । मां गार्हव्यस्य ।

राजा । नदीवगस्तत्र कार्णा ।

विदुषः । भगवन् भव ।

राजा । कथमिदं ।

विदुषः । एव रात्र्यकलङ्काणां अन्ताय द्यारिम आउल्लोकादि अत्ताणां ।

चतुर्त्तिगा तुष्टं ह्येकत्वं । तं यच्च यच्चैः सावत्सराभ्याम् ।
 ह्यसंविद्यमानं यम गत्ताणां अर्णोर्मासिकं संकृण्वन् । तं यच्च
 इत्थं विसृज्यते तं ह्येकत्वं दात्र विस्सामहे ।

राजा । यच्च । अयं चैवमारु । ममापि काश्यासुतावनस्मृत्य
 मृगयाविल्लतं चेतः । इति ।

न नमायतामिदं यमि शक्तौ

वनुरिदमास्तसायम मृगयु ।

सकृद्यमतिमोक्षय च प्रियायाः

मृत इव मुग्धविल्लतं कृतं पदेषु ॥ २६ ॥

विद्वेषकः । इति यच्च । अत्तमत्तं तिमि ह्यस्य काश्च
 मत्तदि । अर्णो मष्ट ह्यस्य आसि ।

राजा । यमि । किमन्यत् । अनतिप्रयत्नं मे सकृद्यममि
 ति स्थितं । अस्मि ।

विद्वेषकः । चीरं जीव । इति मनुष्यकृति ।

राजा । वयस्य । तिष्ठ । सावशपं मे वचः ।

विद्वेषकः । आण्विदं भव ।

राजा । विध्वस्तं भवति ममायकस्मिन्ननावासि कर्माणि सकृद्यम
 भवितव्यां ।

विद्वेषकः । किं मोदमाणापिद्यष्ट । तेन हि मृगहीनो अग्रं
 ज्ञाते ।

राजा । यत्र वक्ष्यामि । कः को अत्र भोः ।

पविश

दौर्बोधकः । प्रणय । आण्विदं भव ।

राजा । रेवतक । सेनापतिस्तावदाह्वयतां ।

देव्यां च । तद् । इति निश्चयः । तदा पुनः वीर्यशः एतां यथा
व्यापकपुष्पा इदा दिपादिदो, एव भद्रा चिददि । उवसपुडु
अज्ञा ।

सेनापतिः । राजागवताम् । अदददापि ज्वागिनि संगया के
वत्तं गुण एव संवृता । तथा कि देवः

अनवरतधनुर्द्व्याम्पालनक्रूरपूर्वः ।

रत्निसरगासादपु स्वदन्तेशरनिर्जः ।

अपचितमपि गात्रं व्यापतत्वादलदमं

गिरिचर इव नागः प्राणसारं विभर्त ॥ ३७ ॥

स्वामी जयत् । गृहीतश्चापदमरणं । किमन्यदवस्थीयत ।

राजा । मन्दोत्तमाहः कृतां जम्भ गगनाध्वान्ना मातृव्यन ।

सेनापतिः । तामिह । सखे । स्थिरप्रतिग्रन्थो भव । अहं ता
वत्स्वामिनां शतवृत्तिमन्तार्तिष्ये । प्रकाश । प्रत्तपत्रयै धैर्यै । ननु
प्रमुखं निदर्शनं ।

१. मदप्रहृदकणोदरं लघु भवत्युत्थानार्थम् । त्रयः

सखानामपि लक्ष्यते विप्रतिमधित्त भयक्रांतार्थः ।

उत्कर्षः स च धन्यवर्ता यदिपत्र, सिध्यन्ति लक्ष्ये चले

मिथैव व्यग्नं दर्शित मृगयामीदृग्विनादः कृतः ॥ ३८ ॥

विद्रूपक । अज्ञभवं पाकिदिं आपातां । तुमं शन्र अउवीद
अउवि आदिगुट्यां तामासिगान्तान्वस्स विपारिकम्स कससि
मुहं गदिससि ।

राजा । भद्र सेनापते । आश्रमनां न कष्ट स्थिताः स्मः । अतस्ति

अथ नाभिनन्दाम् । अथ नावत्

गाह्यां मरुपा निपानसान्तिनं शङ्कमुद्रस्ताडितं

हागलादकादभ्यक्तं मृगकलां रोमन्धमभ्यस्यत् ।

विश्वत् क्रियतां कराकताभिर्मुस्ताज्जतिः पल्वले

विश्रामं लगतामिदं च शिथिलतयावन्धमस्मदन्तः ॥ ३१ ॥

सेनापतिः । यत्प्रभवति तत्र रोचते ।

राज्ञा । तेन हि निवर्तते धृत्वतां कान्तादण । अथा न मे
सैनिकास्तयोवनमुपरन्धन्ति । तथा निपदव्याः । पश्य ।

शमवधानं तदाधनम्

गृहे हि दाहात्मकगतिर्न तेजः ।

स्पर्शानुगता इव सूर्यकान्ता ॥ ३२ ॥

स्तदन्यतस्तोभिन्वाहमानि ॥ ३० ॥

विदूषकः । अमिदो दे उच्छाकवृत्तयो ।

। निष्कान्तः सेनापतिः ॥

राज्ञा । परितनं विलोका । अपनयतु भवत्या मृगाविविशं । रैवत
क । त्वमपि स्वं निगोशमश्रुत्वां कर्तु ।

परितनः । तं देवा आगच्छाद् । इति निष्कान्तः ।

विदूषकः । किदं भवता राणिं निम्माविययं । संवदे एदम्सं या
अवच्छायाए विरदन्तदाविदागादसाणीयाए आसोणं निमीदइ भवं ।
ताव अहंपि सुदासीणी क्हामि ।

राज्ञा । गच्छायतः ।

विदूषकः । एडु भवं ।

। अथो परिक्रम्योपजिह्वे

राजा । माठव्य । अनवाप्तचतुःफलौ असि । मन त्वया दर्शनीयं
वस्तु न दृष्टं ।

विद्वेषक । तां भवं अमर्तो मे चतुर्दि ।

राजा । सर्वं कालमात्मानं पश्यति । तामाश्रमलक्ष्माम्भतां एक
अनामविकृत्य अत्रागि ।

विद्वेषक । एता । हौड । से अत्रमं ता दास्सं । एता
मी अत्रम । दे तावसुष्माया अल्लत्थणाया दासइ ।

राजा । सर्वं । न परिहार्यं वस्तुने पौरवाणां मन प्रवर्तते ।

सुरयवतिसंभवं किल गुणरूपत्वं तत्तत्कलाधिगतं ।

युक्तरथापारे शिथिलं च्युताभव नवगालिकाकभुमं ॥ ४५ ॥

विद्वेषक । एता । इह वस्मात्रि शिथिलान्तरादि अत्रलिदस्स
लिताश्रयान्तरासां भवे । नह इतिशारयापारयाविणा भवदो
इत्ये अल्लत्थणा ।

राजा । न तावदेतां पश्यसि । गैन्धमवादीः ।

विद्वेषक । तंका रमाणिदं । तं भवदोवि विद्वेष्यं उपाददि ।

राजा । अयस्य । किं वदना ।

चित्रे निर्वर्णं परिकल्पितमवयोपा

त्रयांशेयनं मेनसा विधिना वर्तो नु ।

स्त्रीरत्नसुष्टिरपरा प्रलिभानि मा मे

धानुर्विभृत्वगनुचिह्नं वपुशं तस्याः ॥ ४६ ॥

विद्वेषक । नह एव । एतादसां ताणिं नव्यदर्शनां ।

राजा । इदं च मे मनसि वर्तते ।

अनाध्वानं पुण्यं विष्णुनायकान्वृतं कर्तुं

रत्नाविकं इत्वं गधु नवमनास्वादितारमः ।

अखण्डं पुष्पाब्जां पालयित्व च तद्रूपमनघ

न ज्ञाने भाजार् कर्मिह समुपस्थास्यति विधिः ॥ ३७ ॥

विदूषकः । तेण हि लडु परित्ताअडु एं भव्वं । मा रग्गाय

तवस्सिमां रद्दुदित्तिल्लमिस्सिपिक्कणमात्ताम रत्थे पडिस्सि ।

राजा । धरुवली पल्लु तत्रभवता । न च सांनदित्तो अत्र म्

रुज्जानः ।

विदूषकः । प्रतापवन्त अतरिण रीदिसो मे दिस्सिमां ।

राजा । निरानाद्वयप्रभन्भन्तास्सिज्जनः । तथापि तु

अभिमानं माय संयुतमोक्षितं

रुगितमन्यनिमित्तकलादय ।

विनायवारितार्थात्तत्तस्तथा

न विधृता मदनी न च संवृतः ॥ ३८ ॥

विदूषकः । तांकां ददुंमेअस्स तुक् अहं आरीकादि ।

राजा । सार्वाभ्यां विद्यप्रस्थानं पुनः आत्मानतायापि काममावि

कृतो भावस्तत्रव्यत्या । तथा हि

रुग्दुरेण चरणं क्षात इत्यकारणं

तन्वी म्रियता कतिचिदत्र पदानि गत्वा ।

आसौद्विभृत्यदना च विमाचयती

शास्त्राण्यन्तुलमसत्तायां दुमाणा ॥ ३९ ॥

विदूषकः । तेण हि गद्दादपाहेअं कान्हि । विदे तुए उव

पणं तवोवणांति पेक्कामि ।

राजा । सान् । तपस्विनां को जन्मो ज्ञाता । अस्मि । विष्णवे ता
वत् । तेनापदेशेन सप्तदश्यां वशात् ।

पद्मपत्रः । को यत्नो यत्नम् । त्वं रात्रा गां । गोधार
अस्मात् अस्मात् अस्मात् ।

राजा । भूम् । अस्मात् अस्मात् अस्मात् । त्वं निपतति । पद्मपत्राणी
नानि । अस्मात् अस्मात् ।

पद्मपत्राणि त्वं अस्मात् । अस्मात् ।

ताः पद्मपत्राणि त्वं अस्मात् । अस्मात् । ३६ ॥

नेपथ्यः । कृत सिद्धार्थी स्वः ।

राजा । अस्मात् । अस्मात् । अस्मात् । अस्मात् । अस्मात् ।

पद्मपत्र

दौवारिकः । जेद जेद भद्रा । ५६ इव इगिकुमारश्च पडिहा
रूमिं उचरिह ।

राजा । तेन स्थाविलम्बित प्रवेशय तौ ।

दौवारिकः । एसी प्रवेशमि ।

इदी इहा भवता ।

अस्मात् । अस्मात् ।

प्राप्तः । अस्मात् । अस्मात् । अस्मात् । अस्मात् । अस्मात् ।

अस्मात् । अस्मात् । अस्मात् । अस्मात् । अस्मात् ।

रक्षायोगादयथाप्य तप्य प्रत्यक्षं मरिनाति ।

अस्मात् । अस्मात् । अस्मात् । अस्मात् । अस्मात् ।

पुण्यः शब्दा मुनिरिति मुद्रः केवलं राजपुत्रः ॥ ३७ ॥

द्वितीयः । सौतम । अस्मात् । अस्मात् । अस्मात् ।

प्रथमः । अथ किं ।

द्वितीयः । तेन किं

नैतन्निधं यद्यमुदभिधायामासीत् परिचि

मेकः कदा नगरपरिचाराप्रवाहभुनक्ति ।

आशंतात् सारथ्यतापो ब्रह्मदीप्तं नि रन्ते

स्मयति च प्रनुवि विनये पौरुषेण च यत् ॥ १८ ॥

उभौ । उपाया विज्ञाप्य स्व राजन् ।

राजा । भगवतादुपायः । अग्निरादौ भवतो ।

उभौ । स्वास्ति भवता । ३ १ कलान्वयः ।

राजा । अथाऽऽदिष्टः । आर्यामिच्छामि ।

प्रभो । विद्वता भवान्नामसदनिहस्य । तेन भवता प्रार्थयन्ते ।

राजा । किमाज्ञापयति ।

उभौ । तन्मयतः कावस्य गदोत्तमानिथाद्वज्रांसि न द्वावित्र

भुत्पादयति । तत्कालेपरात्र सारथिद्वितीयेन भवता सनाथाक्रियता

माश्रम इति ।

राजा । अनुमूर्तितां जस्मि ।

विद्वज्जः । अगताः । एसा क्षाणि अनुक्रान्ता इ अभवथागा ।

राजा । जितं युवा । स्वयम् । मदधनमुच्यतां सारथि । नया

पासनं स्वमुपस्थापयति ।

दीव्यारिकाः । तं द्वा अगाव्यदि । ३० विज्ञापः ।

उभौ । न ।

अनुसारं पुत्रेणा युक्ताश्वमिदं त्वयि ।

आपदाभयसर्वेषु दीक्षिताः त्वन्तु पौरव्या ॥ १९ ॥

राजा । समाम । गच्छता पुनः भवता । अहम् । पुनः ।
एव ।

उभौ । विज्ञायते । इति विज्ञायते ।

राजा । भातव्य । अशोस्त शकुन्तलादर्जने कुरुक्षेत्रे ।

विद्वान् । पदम् मयास्वादं आसि । दण्डं स्वयम्भुवनात् वि
न्दुवि ग्ना अधस्तादहो ।

राजा । मा भयम् । नन् मत्समाधि निर्मितम् ।

विद्वान् । एम् स्वयसादा रचितदाम्नि ।

प्रथमा

दावारिकाः । सज्जा रथा भार्गवा विज्ञायन्त्याणं प्रकाद ।
एष एषा गभरादो दधोणां आणत्तिदग्ग्रा कर्गग्रा आगता ।

राजा । गच्छ । विमन्त्र्याभिः प्रपिता ।

दीवारिकाः । अहम् ।

राजा । नन् प्रवृज्जतां ।

दावारिकाः । तहम् । इति विज्ञायते । अहम् । एषो भट्टा ।

अवसप्य ।

कारभकः । ज्ञेय ज्ञेय नदा । दिवा आणत्तिदि । आग्रानिणि
चञ्चत्तद्ग्रह पञ्चत्तारणा ग उववासां भावस्सादि । तदिह दौक्षा
शणा अवस्सां शमात्रिद्व्यन्ति ।

राजा । इत्तत्तयस्विचार्य । इत्ता गुरुत्तनात्ता । दग्गमप्यन्तिक्रम
णां । विमन्त्र प्रतीतिवत्तम् ।

विद्वान् । तिसरं विद्य अन्तरान्ति चिद् ।

राजा । सत्यम्भुवनाभूतां जग्म ।

कृत्याभिनिन्दशब्दाद्विनीतवनि मे मन्त्रः ।

पुनः शान्तं जेतुं शान्तः शान्तः ॥ १० ॥

विनिन्दः । सखः । त्वगमाया पत्र इति प्रतिगृह्यता । यना नया
गिताः प्रतिनिवृत्त्य तपोस्वकार्यव्यभनसं मागावना तत्रमवतीना या
कृत्यमनुष्ठातुमर्हति ।

विदूषकः । शांते ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥

राजा । शान्तः कथमनुष्ठातुं शान्तः ।

विदूषकः । अहं शान्तः शान्तः शान्तः । तद्वै गच्छामि ।

राजा । नन्व तान्मापन्ताः शान्तः शान्तः इति मर्दान्मापन्ताः

कांस्त्वमपि सखः प्रस्थापयामि ।

विदूषकः । तेषां अहं शान्तः शान्तः शान्तः ।

राजा । शान्तः । चपला श्वः वदुः । कदाचिदस्मत्प्रार्थनामन्त्रः

पुरभ्यः कथयतु । भवतु । एनमव्यं वदन्ति । विदूषकः एतं गच्छामि ।

व्यस्य । शोणगौरिचादश्रमं गच्छामि । न वदन्तु मन्त्रमपि तापमक

भक्तानां शक्रान्तायां यमानिनादः । पश्य ।

यः अथ वा शक्रान्तायां शक्रान्तायां शक्रान्तायां शक्रान्तायां

परिहृताविज्ञान्यत सखः परमार्थेन न गृह्यतां वचः ॥ १० ॥

विदूषकः । अहं ।

। इति निष्क्रान्ता गते ।

॥ द्वितीयोऽङ्कः ॥

— ० —

॥ तात श्रीगणेशाय नमः ॥ विज्ञान. कृष्णाय नमः ॥

शिष्यः । अहो महानुभावः पाथिव्यां दुष्कृतः । प्रविष्ट एवायं
म नवभवति रक्षणि निरुपद्रवाणि न । कर्माणि प्लुत्तानि भवन्ति ।

का कथा व्याससंभानं व्याशब्देनैव हस्तः ।

उक्तारण्येन धन्यः स हि विद्वानपादुते ॥ ५२ ॥

धात्रिदिमान्वादिमंस्तरणार्थं दर्भानूचिभ्य उपनयामि । पार्श्वभाष्यलोका न
प्रियंवद । कश्यदमुणोरनुत्पन्नं मृणालवन्तं च भालना
पत्राण नीयते । अतिमणिमय । किं ब्रवीषि । आतापस्त्वङ्नादस्त्वद
स्वस्था शकुलत्वा । तस्याः शरीरनिर्वाणायति । तर्हि त्वत्तं
भगवता । सखी मा खलु भगवतः कायस्य कुलपतरुच्छासित ।
अरुमपि तावद्वर्तमानं शान्दपुद्गमस्य गौतमीहस्तं विसर्जयिष्यामि ।

इति विष्णुसंज्ञा ।

॥ विष्णुभक्त ॥

ततः तन्निष्पत्तिं कामयमानाद्वयस्यो रक्षा

रक्षा । मतिं तत्पूर्व

तानि तपसो वीर्यं सा बाला पर्वतानि म विदिनं ।

अन्नमस्मि ततो कद्वयं तथापि नेदं निवर्त्तयितुं ॥ १८ ॥

नरगच्छां निष्पत्तिं । सागुः । भगवन्कृतुमागुम् । यया चन्द्रमासा न स्थिरा
नीयाम्भ्यामतिरिच्यते कर्त्तव्यमनारम्भः । कृतः ।

तव कुसुमशरत्वं शीतारणिमग्निन्दो

द्वयमिदमयथार्थं दृश्यते गर्दिधिषु ।

विरुत्तति दिग्गमेरगिनि-दुर्भग्व

स्वमपि कुसुमवागान्वग्रसारीकराणि ॥ १९ ॥

मतिं तत्पूर्व । वं नु खलु संस्थितं कर्मणि तदग्निरनडातः अमन्तात्
मात्मानं विनोदयामि । निष्पत्तिः । किं नु खलु म प्रियादर्शनादु-
त्तरागमन्यत् । यावदेनामन्विष्यामि । मृगयत्वात् । इमाम्प्रातायां वि-
त्तां प्रायण लतावलयवत्सु मालिनीतीरेषु सरावतीतना शकुन्तला
गमयति । तत्रैव तावद्वहामि । तत्रैव । तत्रैव । अतो
प्रवातभुगोः अमुष्णः ।

शक्यमरविन्दसूरभिः काणवाही मालिनीतरंगिता ।

अङ्गनङ्गनतिरत्रिजलमानिदितुं प्रयत्नः ॥ २० ॥

मतिं तत्पूर्व । अस्मिन्वनमपरिनिर्गतं लतामादयं संनिहितं यो तथा
भवितव्यं । तथा हि । यतो नो यत् ।

अभ्युन्नता पुरस्ताद्व्यभाज्यं त्रयनगोरव्यात्पदात् ।

तत्रैव जस्य पाण्डुमिक्तं प्रदपङ्क्तिर्दृष्टात अतिनवः ॥ २१ ॥

॥ घावद्विष्टपात्ररेणावल्गुयामि । परित्रयः । तत्र कला । मर्त्यः । अये स्तब्धं
नेत्रनिर्माणं । दृष्टा मे मनोऽर्थप्रमाणा सवृत्तुपास्तराणां शिलापद्माभिः
गाना सार्वभौमवन्ध्यास्तः । भवतु । अग्न्याग्नीमां त्रिधम्भकथिताभिः ।

तत्र प्र १३१ यथाशक्त्यापौरा गतः शब्दः ॥ प्रकृ २०१

॥ यथाशक्त्यापौरा ॥

साध्या । अथोक्तः ॥ कृत्वा सिद्धस्तु । अत्रि सुदृष्टादि द
पानिणापत्तत्रादा ।

शकुन्तला । किं वीक्ष्यन्ति मं भक्षिष्यां ।

साध्या विवादे । १३१ ॥ १३२ ॥ १३३ ॥ १३४ ॥

रक्षा । यत्नदस्वस्थशरीरा शकुन्तला दृश्यते । साध्यास्तु त
त्किमेयमातापदोपः स्यात् । इत यथा मे मनोऽर्थ प्रमाणा वृत्तते । न मा
लाभ निश्चयः । अथवा । कृतं संदृष्टुम् ।

॥ ततनन्यस्तारं शिथिलितमृणालिकवल्गुं

प्रियायाः सात्वाधं किम्पि रमणीयं वपुरिदं ।

समस्तापः कामं मनमिहान्निदाधप्रसरणं ॥

॥ १३५ ॥ न तु ग्रीष्मर्षव्यं मुमग्मपरादं पुत्रांतपु ॥ १३६ ॥

प्रियंवदा । अथोक्तः । अपामृष्टः । तस्मा राक्षसाणां पदमहंसाणां
आरुह्य पद्मसुखा विभ्र मष्टन्दला । किं पुत्रानु से तपिनिता
अयं आतादः भव ।

अनसाया । सादः । मगवि ईदिनी आतादा क्रिययस्म । कौटु ।
पुच्छिस्सं दाव ॥ १३७ ॥ साहे । पुच्छिद्व्यासि किंपि । अति
अंकु दे भद्राया ।



शकुन्तला । कर्त्तव्यं त्वया । किं त्वया भासि ।
 अनसूया । कला सउन्दले । आणवत्तु । न च न गणनादस्म
 वृत्तलस्स । किंहु । तादिसी इदितामणिप्रन्थसु कामग्रन्थानां
 अथन्या साणेग्रदि । तादिसिं दे पेक्ताभि । कहदि । किं पिमितं
 दे संशयो । विचारंस्तु प्रपत्त्यदो अत्रापिअ अणत्तु । पडिआ
 रस्स ।

राता । अनायासादनुगतो मदीयस्तर्हि । न किं स्वर्गलोकेण
 मे दर्शनं ।

शकुन्तला । अनायासात् । वत्तिअस्तु मे आदिपावसां दणिंति ।
 सहसा एतां पा सक्काणंमि पिनिदिदु ।

प्रियंवदा । सादि सउन्दले । सुदुठ एता गणादि । किं अत्तणो
 आतङ्गे उक्कसि । अणुदप्रत्तंस्तु परिहृयसा अङ्गदि । केवलं
 लावणागर्ह ह्यात्रा तुगं पा मुत्ताद ।

राता । अविशयमाह प्रियंवदा । तथा किं

ज्ञानलाभवापान्तमाननमुरः कार्त्तिक्यमृतस्तनं

मध्यं ज्ञानतराः प्रकाशचिन्तावंशी हविः पाण्डुरा ।

शोच्या च प्रियदर्शना च मदनलक्ष्मणमात्मनः

पत्राणामिव शाश्वतेन मरुता स्पृष्टा त्वनामाध्वी ॥ ५६ ॥

शकुन्तला । रादि । कस्स वा अणस्स कह्हरसं । आआसद्
 तिआ दाणिं वो भविस्सं ।

उं । अदो एव्वस्तु पित्तन्धो । पिणिदज्जाणसंभितं दि
 त्थवं मन्थदिदणं रुंदि ।

राता ।

पृथग्नमन समुद्र त्वसुखन वान्ना

नमं न वद्व्योते गामनायिकेतु ।

दृष्टो विवृत्य वद्व्योते जयन्ना सतुल

मन्नाचरु अयणाकालस्ता भलो जंस्म ॥ ५१ ॥

शकुन्तला । सकि । दृष्टो वद्व्योते गम वसणवद्व्योते आभ्रदो सो
तन्वोपमर्शकाला जयसो । तदा आरुद्व्योते तन्मदेण आदिन्नासाण
एनद्व्योते ह मन्नुता ।

राजा । मन्ना । अतं आतव्यं ।

स्मर एव तापकृन्नुनिर्वीपणिना स एव मे जालः ।

द्विस्त इत्वारुप्यामस्नयान्वय द्रोवन्नुक्तम ॥ ६० ॥

शकुन्तला । तं तद् वी अणुमदे । तद् वद्व्योते । तद् तस्म गार्शो
पो अणुकम्प्याण्डजा शोमि । अणुका अत्रम्सं मिधरु मे तिल्लादयं ।

राजा । संशय हृदि वचनं ।

प्रियंवदा । जालक । अणुसू । द्रुगअमम्भदा अत्रन्मा इयं
कालकृष्णस्स । अणिं वद्व्योते एसा । सो कालावभृदो पारवा
णो । ता तुत्तं स अकिस्तासो अदिन्नादिद्व्योते ।

अनसूया । तद् । तद् गामासि ।

प्रियंवदा । जाल । सकि । दिद्व्योते । अणुव्योते स अकिणिव
सो । साग्रं तद्व्योते ककिं वा मदनार् आद्व्योते । को द्योति
सकृत्तारं अतराण अदिभुतन्तदे पत्वावद्व्योते सकिदि ।

राजा । किमत्र चित्रं । यदि त्रिशाख शशाङ्कलोचामन्वर्तेत ।

अनसूया । क्यो उण उवाचो भव । जेण अविताम्ब्यं गिद्व्योते
अ सकृत्त गामासि मन्नाद्व्योते ।

प्रियंवदा । गिरिधरं चित्तमिदं स्रजः । मन्त्रान् प्रोचते ।

अनसुया । कुरुं विभ ।

प्रियंवदा । तं सा राक्षसो हर्मसा सांगतीदृशं सुदक्षिणा
सो । उमाश्च दिशश्चैव यज्ञाश्चरिषी लक्ष्मीर्वादि ।

राजा । सत्यमेवैवैव हवामि । तथा हि

इदं भविष्यति सत्यं सत्यं सत्यं सत्यं

निमित्तं निमित्तं सत्यं सत्यं सत्यं सत्यं ।

अनसुया । सत्यं सत्यं सत्यं सत्यं सत्यं सत्यं

तत्कालं सत्यं सत्यं सत्यं सत्यं सत्यं सत्यं ॥ ६१ ॥

प्रियंवदा । सत्यं सत्यं सत्यं सत्यं सत्यं सत्यं
देवसत्तायदं सत्यं सत्यं सत्यं सत्यं सत्यं सत्यं ।

अनसुया । सत्यं सत्यं सत्यं सत्यं सत्यं सत्यं
भगवति ।

शकुन्तला । वा गिरिधरं चित्तमिदं स्रजः ।

प्रियंवदा । तेषां हि अत्तणो उच्यमानपुत्र्यं चित्तं सत्यं
किंपि सत्यं सत्यं सत्यं सत्यं सत्यं सत्यं ।

शकुन्तला । सत्यं सत्यं सत्यं सत्यं सत्यं सत्यं
अनसुया । सत्यं सत्यं सत्यं सत्यं सत्यं सत्यं ।

राजा । सत्यं

अनसुया । सत्यं सत्यं सत्यं सत्यं सत्यं सत्यं

विष्णुस्य सत्यं सत्यं सत्यं सत्यं सत्यं सत्यं ॥ ६२ ॥

लभत वा प्रार्थयता न वा धियं

धिया द्रष्टुं कथं सत्यं सत्यं सत्यं सत्यं ॥ ६३ ॥

साम्यौ । अतगुणावभाषिणि । कां दाशिं. सरिणिट्वावर्त्तिग्रं
सारदिग्रं त्राणिणिं पट्टेण वारिदि ।

शकुन्तला । मर्ति । पित्रोऽदृष्टा दाणिंम्ह । २५ । यत्ता चित्तार्ता
राजा । स्यत्ति । त्वत्तु । विस्मृत्तनिमेषण चक्षुषा प्रियामवत्तोवसा
मि । यतः

२६ । उर्ध्वार्तिरश्रुत्तानमाननमस्या पदानि स्वयुक्त्या ।

कण्ठांशान् पथयन्ति मय्यनुराग कपोलिन ॥ ६७ ॥

शकुन्तला । कन्ता । चित्तिग्रं मरु मीद्वत्तु । २७ । संगिदिदा
णि उषा त्वेदगासाकणाणि ।

प्रियत्रदा । रमास्मिं सुधादरमुडमार पालिणोपेत पकिदि गिक्कि
त्तवगां करिदि ।

शकुन्तला । मर्ति । उर्ध्वार्त्या । कन्ता । सुण्णक दाणिं, मंगदत्थं २८ ।
वत्ति ।

२९ । अर्वादिदम्ह ।

शकुन्तला । अर्वा ।

तुंरुत्ता एव आणा दिग्र्यग्रं भगु उषा कामं दिव्याचि रत्तिंणि ।

गिग्घिणा त्वेद्व वत्तिग्रं तुद्व वृत्तगणारुहाडे अङ्गारे ॥ ६८ ॥

राजा । ३० । मय्यात्ता ।

तपन्ति तन्मगात्रि मदभस्त्रामानेणं मां पुनर्दकृत्येव ।

गन्तव्यात्त यथा जणाडे न तथा हि कमृद्वती दिव्या ॥ ६९ ॥

साम्यौ । ३१ । साधदं अर्वात्ताग्निवर्णा मणारुहसा ।

३२ । मय्यात्ताग्निवर्णा

राजा । अत्तमत्तमागासन ।

संदृष्टुं सुमशयिष्याम्यशुक्लास्तस्मै ॥ ६५ ॥

गुरुपरित्यागिनि न ते गात्राण्यपरास्मदन्त ॥ ६६ ॥

अनसूया । इदा भित्तातन्त्रकृदसं भलकोः । त्वयस्मा ।

राज्ञोपनिषत् । अष्टमोऽध्यायः समाप्तः ।

प्रियंवदा । त्वेणापि वा अपाण्णराशौ पश्यन्तो । मदीसिणो

हो मं उपा उत्तवादिषि रंदि ।

राज्ञा । भद्रे । नैतत्परिहार्यं । त्वयस्मात् । त्वनुमन्तुतं पं अन
यति ।

प्रियंवदा । आनामस विश्ववादिनां अतिद्वेषाणां कदाद्व्यं
ति एसां वा धर्मा ।

राज्ञा । नास्मात्परं ।

प्रियंवदा । तेषां हि इयं गां पित्रसक्तौ त्वमं उद्दिशिष्य इमे
अवत्यन्तरं भव्यवदा मयाणेण आर्त्तविदा । ता अकस्मि अन्व
वत्तीह ज्ञोत्विदं मे अत्रन्म्विदुं ।

राज्ञा । भद्रे । साधारणो ज्यं प्राणयः । सार्धान्गुकांता जस्मि ।

शकुन्तला । प्रकृत्याम प्रत्यागता कृता । किं अनेष्टरविश्वोपद्व्यम्भु
अस्स राक्षसिणां शरीरका ।

राज्ञा । सुन्दरि ।

इदमनन्यपरायणमन्यथा

कृदयमंनिहितं कदमं मम ।

यदि सम्प्रयस मदिश्चरणे

मदनवाणकतो जस्म कता पुनः ॥ ६७ ॥

अनमया । त्वयस्मा । त्वद्व्यवस्था राधार्णा सुणीध्वनि । तद्व

पां मिश्रसर्का बन्धुअणारोअणिड्ढा पा रं । तद्धु गिअरुकादि ।
राजा । भद्र । किं बद्धना ।

परिधरुवद्धने अपि द्वे प्रतिभे कलस्य मे ।

समुद्रवमना चावी सखी च युवयोरपि ॥ ६८ ॥

उभे । गिअरुदम्ह ।

प्रियंवदा । वरुणिप । अणसृष्ट । अह एसा इदो दिगादिहो ।
उत्सृज्यो मिश्रपादयो मादरं अणसादि । हहि । संजोह्य ए । अण
परिधो

शकुलता । कृता । अशरणम्ह । अणदरा वो आअच्छु ।

उभे । पुकवीष्ट सा सरणं । सा तद्धु समीपे बद्ध । गति

निष्ठाता ।

शकुलता । कर्णे गदायां हृदये ।

राजा । अलमाविर्गन । नन्वधमाराधयिता ननस्तत्र समीपे वर्तते ।

किं शीतलं लामविनादिभिराद्रियाता

नसंचारयामि नलिनीदलतालवृक्षैः ॥

अङ्गे निधाय कर्भारु यथासुखं ते

संवाहयामि चरणावुत पद्मताम्रौ ॥ ६९ ॥

शकुलता । पा मापाणीष्टु अत्ताणं अबरुद्धसं । अणव्यव नन

मिच्छति ।

राजा । सुन्दरि । अपरिनिर्व्राणा दिवस इयं न ते सम

वस्था ।

उत्सृज्य कुसुमशयनं नलिनीदलकल्पितं स्तनावरणं ।

कथमातये गमिष्यसि परिव्राथापेत्तवैरङ्गैः ॥ ७० ॥

रति प्रकाशः ॥ १ ॥

शकुन्तला । पोरत्र । रक्त्वं विषयं । मन्मथसंन्यासं । अत्र
अत्ताणां पक्ष्यामि ।

राजा । भार । अल गुरुतनभयन । दिव्या । ते विदितधर्मो
तत्रगवानत्र न दोषं ग्रहीष्याति कुलपतिः । अपि च

मान्त्रिण विचारम अहं राज्ञोर्विकल्पका ।

श्रुते परिणीतास्ताः पितृभिर्वाभिर्नान्दताः ॥ ७१ ॥

शकुन्तला । मृत्त दाव मं । भृशाल सङ्कीर्णं अणुभागाद्भस्म ।

राजा । भवतु । गोल्याम ।

शकुन्तला । कदा ।

राजा ।

अपरिहृतकामलस्य तत्र

नृसुमस्यैव नयस्य पदपद्मेन ।

अधस्य पिपायता मया ते

सदयं सुन्दरि गृह्णते रसो जस्य ॥ ७२ ॥

रति मुक्तमया । नयस्यैव पदपद्मेन । ॥ ७२ ॥

नयस्यै । चक्रवाक्यद्वय आनन्दोक्तिः । सक्तमरुं उच्यते । अथवा ।

शकुन्तला । नयस्यै । पोरत्र । असेस्य मम सरोरवुत्ततावत्त
भात्र अदडा गादगी इदो एव्य आग्रच्छदि । दाव विउवत्तरिदो
लोदि ।

राजा । तथा । एवमभावात् ।

ता प्रविशति पात्रतया गौतमी सखी च ।

सख्यो । इदो इदो अदडा गादगी ।

प्राधान्ये । राजन् ।

सायन्तन सवर्णकर्माणां संप्रवृत्तिः

त्रेदिं हुताग्निमध्वनाः संपूर्णा प्रवृत्त्याः ।

होवासरसि बहुधा भवमादयन्ताः

संध्यापर्यादकारिणाः शिशुनाशनाना ॥ ७५ ॥

रात्रा । अथमगमागच्छामि । इति संध्या ॥

॥ तृतीया ७५ ॥

॥ तमः प्रविशः तस्यैव नमः ॥

अनसूया । कृता प्रियंवद । तद्वि गन्धर्व्येण विद्याकविकृणा
गिन्धुत्तकृत्वाणा सउन्दत्ता अणुत्रयनत्तुगांनणी संवुत्तं प्रिव्यदं
मे द्विअं । तद्वि एत्तिअं चित्ताणिदं ।

प्रियंवदा । कदं विअ ।

अनसूया । अन्ना सा गृहसा इदं परिभनाविअ इत्तिं वि
सादत्ता अत्ताणा एत्तं पर्वीसअ गन्धर्वमभागदो इदागदं वृत्तं
समरदि वा ण वेत्ति ।

प्रियंवदा । वीसदा कोहि । ण तादिसा आकिदिविसेसा गण
विरादिणा कोत्त । तादा दाणि इद वृत्तं सुणिअ ण आण
किं पटिवाज्जिस्सदित्ति ।

अनसूया । तद्वि अन्तं देवनामि । तद्वि नस्स अणुमदं भव ।

प्रियंवदा । कदं विअ ।

अनसूया । गुणवद कणआ पांडवार्त्तात्ता अत्तं दत्तं पदमां
सकप्या । तं तद्वि देव्यं एव्यं संपाददि । ण अत्ताअसंण किद
तथा गुरुअणा ।

प्रियंवदा । पुष्पावनं विनीतम् । सति । अथवा । वसिष्ठः । अथवा ।
कुसुमारं ।

अनसूया । एषां प्रिया । कौटिल्यं सञ्जयनाथं सादृश्यात् । अथ
गोत्रम् ।

प्रियंवदा । कुञ्जदि । तत्तत् । अथवा ।

नेपथ्ये । प्रथमं भागम् ।

अनसूया । एषा । सति । अथवा । अथवा । अथवा ।

प्रियंवदा । एषां सञ्जयनाथं सञ्जयनाथम् । अथवा । अथवा ।
कौटिल्यं अथवा ।

अनसूया । एषा । अथवा । अथवा ।

॥ १ ॥

नेपथ्ये । आ अतिथिपरिभाषिणि ।

विचित्रायां भगवन्महोदयम् ।

तपोधनं वेत्ति न मामुपस्थितम् ।

स्मरिष्यति त्वां न स त्राधिता जये म

न्वत्वा प्रमत्तः प्रथमं कर्तामव ॥ ६ ॥

प्रियंवदा । कदा कदा । अथवा । अथवा । अथवा ।
एषां अथवा । अथवा । अथवा । अथवा ।
अथवा । अथवा । अथवा । अथवा ।
अथवा । अथवा । अथवा । अथवा ।
अथवा । अथवा । अथवा । अथवा ।

अनसूया । अथवा । अथवा । अथवा ।
अथवा । अथवा । अथवा । अथवा ।

प्रियंवदा । तच्छ । इति निष्कृतं ता ।

अनसूया । यत्किंच खांता । अन्ना । आधेयकालिदाह गश्छ
पद्मभू मं कृत्यादो पुण्याभयणं । २॥ पुण्योभयं ज्ञपयति ।

पथिष्य

३५

प्रियंवदा । सान्नि । सान्निद्विको सां कस्म अण्णमं पडिगे
गच्छदि । निम्पि उण साण्णमां विदा ।

अनसूया । नित्तं । नत्तिं नत्तं लहं । यत्किंच ।

प्रियंवदा । ता निवतिदु ण इच्छदि । तदा विनाविदो गश्छ
भयवत् । यत्किंच पथिष्य अविनादत्तपदावसा इच्छिदुणस्स
भयवत् दूदा अन्नादो मरिसिद्व्योत्ति ।

अनसूया । तदो तदो ।

प्रियंवदा । तदो । मे वयणं अण्णमावित्ते ण प्रच्छदि । किंच
अच्छिणाण्णमादंमाणेण भावा निवत्तिस्मादंत्ति भयवत्तां मयं अन्ना
रिच्छिदो ।

अनसूया । सक्कं दाणिं अस्मसिद्धं अत्थि वं नण राहसिणा संप
त्तिदेण मणामद्विद्वं प्रकुत्ताप्रमं सुमदणीअत्ति मयं प्रिणादं ।
नत्तिं सान्निणावत्ति सउन्दत्ता भाविससदि ।

प्रियंवदा । सक्क । हक्क । देवकडं दाव निवत्तेम्ह ।

इति पथि नाम्ना

३६

प्रियंवदा । कञ्जलाअय । अणसूह । पक्कं दाव । वामकण्ठोवदि
द्विअण्ण आत्तिरिद्धा विअ पिअमादी भतुभदाह विमोह अन्नाणां पि
ण हसा विभावेदि । वि उण आअत्तुमं ।

अनसूया । प्रियंवदं । तन्ना हव्व णो पुक्कं हणी वत्तलो

चिरं । रक्षित्वा च पवित्रं यन्त्रं विभक्तम् ।

प्रियंवदा । तं तपिं जगद्गुरुं तं भगवन्मम गिरिदि ।

॥ १॥

॥ विष्णुस्तोत्रम् ॥

॥ १॥

शिष्यः । वैष्णोपनिषत्पारांशमादिष्टो जगत्प्रभुस्तत्ता प्रवृत्तांशुपावृ
त्तेन काश्यपेन । प्रकाशं निर्माता यद्वत्किमागि । कियद्व्यशिष्टं
रज्ज्वा इति । तस्मात्प्रभुः स । कृत प्रभातं । तथा हि

यात्यक्तो अस्तशिखरे पातेरोपधीना

माविष्कृतारुणपुरःसर एकतो ज्वा ।

नक्षो हस्य युगप्रवसन्तमाग्यां

लोका निवसन्त इत्रान्मदशानराष्ट्र ॥ २० ॥

अपि च ।

अन्तर्हिते शशिनि सव सुमुदती मे

दृष्टिं न नन्दयति सम्पूर्णविशोभा ।

दृष्टप्रवासां नान्यप्रलावनस्य

इत्यादि नूनमतिमात्रमुदुःसहानि ॥ २१ ॥

॥ १॥

अनसूया । तद्वि एव निमग्नपरम्परात्वात् दानास्तु ददं ए
विदधं । तद्वि तेण एण सउन्दत्ताश्च अणत्तां आणत्तिदं ।

शिष्ट । माधुपास्थितां कामवतां भुत्त निवेदयामि । एता

१३४

अनसूया । पां पुत्तावि किं करिस्सं । ए म उद्देशावि निध
पराणदत्तां कल्यपत्तां अमरात्ता । कामं तां सतामा काद ।
तेण अभभगोभ तां सुणत्तिअत्ता सत्ती पदं करिदा । अत्ता । इत्ता
मरातां एता विअत्तिदं । अणत्ता कदं भा शदत्ता तारिसाणि म
त्तिअ शताअम्भ कात्तास्स तत्तम्भत्तां ए विअत्तादं । ता इत्ता अ
दिभाण अत्ताअत्ता से विअत्ताम । अत्तास्स तात्तास्सताण का
अत्ताअत्ता । ए सत्तीगामी तात्तात्ता वत्तासिदात्ता ए पांतां
पत्तासत्तात्तात्ता तादत्तास्सत्ता दत्तासत्तात्तात्ता आत्तासत्ता सत्ता
न्दत्ता एत्तात्ता । इत्ताअत्ता अत्तात्ता किं करिस्सं ।

प्रतिपत्ता

प्रियंवदा । एता । सत्ति । तत्ता तुत्ता सउन्दत्ताश्च प्रत्यगात्ता
उत्ता निअत्तिदं ।

अनसूया । एता । कदं एत्ता ।

प्रियंवदा । सुणत्ति, दाणि । सुणत्तिदत्ताश्च सउन्दत्तासत्ता
मत्ताम्भ ।

अनसूया । तदो तदो ।

प्रियंवदा । दाव एता लज्जावत्ताम्भ किं पत्तासत्तात्ता मत्ता तादत्ता
सत्ता एत्ता अत्तान्दत्ता । दादत्ता । धम्मात्तात्तात्तात्तात्ता दाव
मत्तासत्ता पात्ता एत्ता आत्ता पत्ता । एत्ता । मत्तासत्तात्तात्ता

चित्र विन्ता अमोघणिन्ता मन्त्राः । अन्त इव इन्तार्त्तमि
दं तुमं भक्तानां सन्नासं विमर्शजिह्वं ।

अनसूया । अरु केषु सुदो तादृश । म । स्तनो ।

प्रियंवदा । अग्निसरणं पवित्रस्म मरीं विष्णु र्दोह्य वा

आह ।

अनसूया । मन्त्राः । अरुक्ति ।

प्रियंवदा । सौम्य भावि म

दुष्टतेनाहितं तदो दानां अवि लः ।

अर्वाक सन्तां वक्तव्यमिह । शर्माभ्य ॥ ३९ ॥

अनसूया । मन्त्राः । साह । प्रियं मे । प्रियं मे । किं दु

अन्त एव सन्तुला भिन्नादन्त इवमन्ताकारणं परितोमं अग्न
होगि ।

प्रियंवदा । सौहि । वयं दाय उक्तां विष्णोदस्माना । सा
तवस्सिणी णिन्नुदा कोट ।

अनसूया । नेण हि इदस्मिं चदसात्तावन्मिन्दे गगरीरुग्गमुग्ग
दतामिमित्तं इव वान्तरक्षमा गिर्गिता मर् कमरगादिय्या । ता
इमं कन्थसाणिहिदे करहि । आव अरुपि म भिग्रताग्रगाह तिरथ
गित्तिअं इव्वाकिसलयाणिता मङ्गलसमान्तम्भाणाणि विरदमि ।

प्रियंवदा । तद् करीअदु ।

अ. गुणो निष्कान्ता । प्रियंवदा । मन्त्राः । मन्त्राः । मन्त्राः ।

* नेपथ्ये । गोतमि । आदिश्रुतां जाद्विर्वागश्चा शकुलतानयनाथ ।

प्रियंवदा । कर्णो इव । अणसृष्ट । तुवर तुवर । इदं नृ इति
णाः रगानां इतीयो सदावीयति ।

अनसूया । मरि । एरि । मरु ।

प्रियंवदा । पयसा । रसा । सुखादह । एव । मिहामास्त्रिदा ।
 डिचिदाया । सुखादि । तात्त्रिवायणकारि । तात्त्रिवायणकारि ।
 भाग । मरुदन्ता । चि । उपायमन् ।

तात्त्रिवायणकारि । तात्त्रिवायणकारि । तात्त्रिवायणकारि ।
 तात्त्रिवायणकारि । तात्त्रिवायणकारि । तात्त्रिवायणकारि ।

द्वितीया । वरु । वीर्यमयिणी । कौटिल्य ।
 तृतीया । वरु । वीर्यमयिणी । कौटिल्य ।

द्वितीया । वरु । वीर्यमयिणी । कौटिल्य ।

सप्तमी । वरु । वीर्यमयिणी । कौटिल्य ।

शकुन्तला । वरु । वीर्यमयिणी । कौटिल्य ।

उभे । वरु । वीर्यमयिणी । कौटिल्य ।

मङ्गलसमाप्तम् ।

शकुन्तला । वरु । वीर्यमयिणी । कौटिल्य ।

मङ्गलसमाप्तम् ।

उभे । वरु । वीर्यमयिणी । कौटिल्य ।

मङ्गलसमाप्तम् ।

प्रियंवदा । वरु । वीर्यमयिणी । कौटिल्य ।

मङ्गलसमाप्तम् ।

॥ प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

उभौ । इदमलंकरणमलंक्रियामात्रम् ॥

॥ सर्वे विद्वत्तया विद्वत् ॥

गीतमी । तच्छ एतत् । कुदो हं ।

प्रथमः । तात्काशप्रभावात् ।

गीतमी । किं गाणसां मिता ।

द्वितीयः । न खलु । न खलु । प्रथमः । तच्चम्वता अभ्यासता ।

शकुतल्लोकेनोर्वनस्यतिम् । कुम्भान्याज्जर्जरात् । तत् रदना ।

ल्लोकेनोर्वनस्यतिम् । कुम्भान्याज्जर्जरात् । तत् रदना ।

नित्यमप्यस्योर्वनस्यतिम् । तत् रदना ।

अन्यथा वनद्वतामस्तत्तल्लोकेनोर्वनस्यतिम् ।

दत्तान्याभरणानि तत्तल्लोकेनोर्वनस्यतिम् ।

प्रथमः । शकुतल्लोकेनोर्वनस्यतिम् ।

दे भत्तुणां गुरु आणुहोद्वता सत्यन्तच्छति ।

॥ शकुतल्लोकेनोर्वनस्यतिम् ॥

प्रथमः । गीतमी । इत्येतत् । प्रथमोऽध्यायः ॥

द्वितीयः । तथा ।

॥ १ ॥

सर्वो । अहं । अणुबहुतभूतानां गुरु दाना । चित्तकम्मपरिग्रहात् ।

शकुतल्लोकेनोर्वनस्यतिम् ।

॥ १ ॥

तत् प्रथमोऽध्यायः ॥

काश्यपः ।

वास्यस्यग्न शकुलंलति केदयं संस्पृष्टमुत्सृज्य

काण्डः सान्निभतवाप्यवृत्तिनत्पुमप्रियाक्षडं दर्शनं ।

वल्गायं यम तावदीदृशमपि द्वायादराज्यौकसः

पीडयते गृहिणाः कथं नु तनयावह्निषट्पदःखर्नयेः ॥ ८१ ॥

राजं परिश्रामत

साय्या । कृत्वा सडन्दले । अवसिदमाण्डणामि । परिधीरु सं
पदं मममनुग्रहं ।

॥ प्रकुम्भसालाया परिश्रमे ।

गोतमी । तादि । एसां दे आणदपरिलार्किणा चक्रुणा परि
सायता विभ्र मुन्न उच्चदिदा । आभारं दाव पाडिबड्ड ।

शकुलता । एसां । तादि । वन्दाम ।

काश्यपः । वत्से ।

गयाताव शार्गिष्ठा ननुर्वड्डमता भव ।

सुतं त्वमपि सम्राजं सेवं पुरमवाश्रुहि ॥ ८२ ॥

गोमती । भगवन् । वरोक्यु एसां । ए आसिसा ।

काश्यपः । वत्से । इतः सग्यो दुतामिन्प्रदानिणीवुरुध ।

॥ सर्वे परिश्रामन्ति ।

काश्यपः । काश्यपः एसायते ।

अमी वेदिं परितः कृतधिष्ण्याः

समिद्वन्तः प्राक्तसंस्तोपादिर्भाः ।

अपघ्नन्तो दुरितं कृष्यमन्धे

वैतानास्त्वां वल्लयः पावयन्तु ॥ ८३ ॥

प्रतिष्ठस्वेदानीं । धर्मेक्ष्यं । धा न शार्ङ्गस्वमिथा ।

प्राविश

शिष्यः । भगवन् । स्मे स्मः ।

काश्यपः । भगिन्यास्ते मार्गमादेशय ।

शार्ङ्गस्वः । इत इतो भवती ।

॥ सर्वे परिक्रमा ॥

काश्यपः । भो भोः सौनहितास्तपोवनतस्तव ।

पातुं न प्रथमं व्यवस्थाति नृत्तं मुखास्वर्गिणीषु या

नादत्ते प्रियमण्डनापि भवतां स्तदन्त या पत्न्यत्र ।

आद्यं व क्रुमाप्रसृतिसमय यस्या भवत्पुत्रावः

स्येयं गतिं शकुन्तला पतिगुरुं सर्वैर्नुद्यायतां ॥ १४ ॥

सौनहितास्तपोवनतस्तव ।

अनुमतागमना शकुन्तला

तस्मिन्निगं वनव्यसन्धुवि ।

परभृतविरुत्तं कलं यथा

प्रातिवचनीकृतमेभिरद्विजं ॥ १५ ॥

आकाशे ।

रम्यान्तरः वमालिनीकुरितः सरंगम

श्रुत्यादुर्भानिषमिताक्रमयूयतापः ।

भूयात्कुशेणपरनाम्देरपरस्याः

शास्तानु कूलपवनश्च शिवश्च पुन्या ॥ १६ ॥

॥ सर्वे गतिनयताकर्माणां ॥

गौतमी । ज्ञादे । पादित्राणसिणिद्धादिं अणुपादगमणासिं तन्त्रो
वपादेवदादिं । पणम भव्यवदीपां ।

शकुन्तला । सपत्न्या परीक्षिता । नृपति । कृत्वा पित्र्यं च । तां शकुन्तलाम्
तदंशेषां सुप्राश्रयि अस्मिन् पारमथ्यात् इत्युक्त्वा तं चत्तुष्पात् प
रदां प्रत्यर्पित ।

पित्र्यं च । तां केवलं तत्प्राप्त्या विरुक्ता दत्ता सती एव । तु
उत्तरि द्वितीयास्त तत्प्राप्त्या सांन दात्र सगत्या दीसत् । *

उत्तमोत्तमं च भवति ॥ इन्द्रो प्रसिद्धतां च भवति ।

ओसारिअपादुपत्ता मुच्यते अस्मूपा विग्र सदाग्रो ॥ २० ॥

शकुन्तला । सपत्नी । तदा । तदावस्थितिं च वृत्तांतिनिं दात्र
आमन्त्रयस्ते ।

काश्यपः । अथैव त तस्यां सोदर्यं स्नेहं । इयं तावदक्षिणम् ।

शकुन्तला । सपत्नी । वृत्तांतिनिम् । चतुसंगदात्र मं पञ्चास्तिङ्ग
इदं गदात्रं साक्षात्प्राप्तिं । अज्ञाप्य हृदि द्रष्टार्यवत्तिणी दं पृ भविसं ।

काश्यपः ।

॥ संकल्पितं प्रथममव मया तवार्थं

नतीरगात्मसदृशं सुकृतिर्गता त्वं ।

भूतेन संश्रितवती नवमालिनी ।

मस्यामरं वयि च संप्रति वीतचित्तः ॥ २१ ॥

इतः पन्थानं प्रतिपद्यस्व ।

शकुन्तला । सपत्नी । कृत्वा । एसां दुर्वेषां वां कृत्ये पि
कृत्या ।

सपत्नी । अग्रं तपां कस्त कृत्ये समर्पिते । इति धाव्य निरुत्ता ।

काश्यपः । अनसृगे । अलं रुदित्वा । ननु भवतीभ्यामेव स्थि
रीकर्तव्या शकुन्तला ।

वाङ्मयः । तेन स्त्रीणां क्षीरवृक्षच्छायाभास्यमानः ।

परिचयः

काश्यपः । कर्मणः । विं नृ खलु तत्रमप्यती दुष्कृतस्य मुक्तव्यस्य
स्मार्तिः संदृष्टव्यः । तत्र चिन्तयति ।

शकुन्तला । अत्र निम्नं । कृत्वा । येष्वपि पातितोपतत्तादिं पितृ
सहस्रं अदेववर्ती आदरा चकृवार्थं यादृदि । इकारं अरुं करमिति ।
अनसूया । सति । मा हन्तुं मरिच ।

एसांच पिण्या विणा गमइ रश्मिं विराच्यदीह्यरं ।

भरुचपि विरुद्धवत्तं आमात्रन्धां सहस्रंदि ॥ ११ ॥

काश्यपः । शार्ङ्गव । तया मदचनात्स राजा शकुन्तलां पुरस्कृ
त्य वतव्यः ।

शार्ङ्गवः । आज्ञापयतु भवान् ।

काश्यपः ।

॥ अस्मान्साधु विचिन्त्य संगमधनानुसं कालं वात्मनः

स्वयस्याः कथमप्यवस्थव्यकृतां सहस्रवृत्तिं च तान् ।

सामान्यप्रतिपात्तपूर्वकमियं दारिद्र्यं दृष्ट्वा तया ।

भाग्यागतमनः परं न खलु तदाच्यं अभूवन्धुभिः ॥ १२ ॥

शार्ङ्गवः । गृहीतः संदेशः ।

काश्यपः । वत्से । त्वमिदानीमनुशासनं ग्रासि । वृत्तीकसां अपि
मत्तां लीकिकसां त्वयं ।

शार्ङ्गवः । न खलु धीमतां यश्चद्विपत्ता भाम ।

काश्यपः । सा त्वमितः पतितकुलं प्राप्य

शुश्रूषस्य गुह्यकृतं प्रियराखीवृत्तिं रापनीजने

भर्तुर्विप्रकृतापि गणपतया मास्म प्रतीपं गमः ।

भूयिष्ठं भव दक्षिणा पारुषाण मय्यनन्तरिनी

पाक्येवं गृहिणीपदं पुत्रनयो वाधाः कल्पसाधनः ॥ १३ ॥

कथं वा गौतमी गन्तव्यं ।

गौतमी । इतिथा वदन्तामस्य उच्यते । तदिह । इदं वदु
सर्वं आधारेति ।

काश्यपः । वत्से । परिश्रजस्व मां सखीजनं च ।

शकुन्तला । ताद । इदं इव्य पिप्रवदागिस्माया भर्ताया पितृ
तिस्सति ।

काश्यपः । वत्से । इमं अपि प्रदेये । न युतमनयास्तत्र गन्तुं ।
यथा सह गौतमी गच्छति ।

शकुन्तला । पितृमां मय । कुरु दाणि तादस्स अदादो परिश्रज्या
मलगतस्सुभुत्तिथा चन्दणत्तदा विप्र देसजरे जीवित्रं धारस्सं ।

काश्यपः । वत्से । विमेवं कातरासि ।

अभितनवन्ता भर्तुः श्लाघ्यं स्थिता गृहिणीपदे

विभवगुर्ताभिः कर्त्यस्तस्य प्रोत्तनगमाकुला ।

तनयगचिरात्प्राचीवार्क प्रसूय च पावनं

मम विरक्ततां न त्वं वत्से शूनं गणयिष्यसि ॥ १४ ॥

शकुन्तला पित्र पश्यति पति

काश्यपः । यदिच्छामि ते तदस्नु ।

शकुन्तला । सख्यादपेत्त । कुला । दुर्वि मं समं इव्य परिस्सज्जु ।

साव्यो । तण कथा । सदि । तद् गाम सो राया पञ्चदिगाणा

मन्यरो भवे । तदो स इमं अत्ताणामहेअदित्र्यं अदुतीअयं देसादि ।

शकुन्तला । इमिणा संदेहेण वो आयग्निदग्धि ।

१. साव्यो । मा भाग्याह । साव्यो वायव्यः ।

शाङ्करः । युगात्तरमात्रः सविता । चरतां भवती ।

शक्यता । अग्रेयसिन्धुः । ताद । कदा णु भूयो तन्मोक्षं
वाक्यसं ।

काश्यपः । श्रूयतां ।

भूया चिराय चतुर्न्मदीसाप्रती

दौष्ट्यन्तिमप्रतिस्थं तनयं निवश्य ।

मन्त्रो तदोपतकुटुम्बभरणं सार्व

शान्ते करिष्यासि पदं पुनराश्रमे ऽस्मिन् ॥ १५ ॥

गोतमी । तादि । पारिहोयदि गगणं वस्ता । शिवत्तेहि विदहं ।
अकृत्वा । विरेणान्नि पुणा पुणा एसा दृव्यं गच्छस्सादि । शिव
त्तदु भव ।

काश्यपः । वत्स । उपरुध्यते तपोनुष्ठानं ।

शक्यता । अथ । कर्ममात्रेण । तन्मोक्षं वापीडिदं तादसरीरं । ता
भा अदिमत्तं मम विदं उक्तपिठदं ।

काश्यपः । अनिष्टाय ।

अग्रेयसिन्धुः मम शोकं वत्सं नृ अत्मे त्वया चरितपूर्व ।

उत्ततद्विष्टं नीवार्यन्ति विलापयतः ॥ १६ ॥

गच्छ । शिवान्ते पन्थानः सन्तु ।

निष्प्रतप्ता शक्यता गच्छानिगमः ।

साव्यो । प्राकृत्यन्तो विमोक्षता रुद्धी रुद्धो । अतन्तिरिद्धा राउन्दला
व्यापारिष्ट ।

काश्यपः । अनिष्टाय । ग्रन्थसुमे । गतवती वी सक्षमचारिणी ।

निगृह्य शोकमनुगच्छतं मां प्रस्थितं ।

उभे । ताद । सञ्जदत्ताविरहितं सुखं विद्य तत्त्वावणं कष्टं पवि
सामो ।

वत्सल्यः । सैवप्रवृत्तिरिवदर्शनी । तादार्थं वर्तमानं कृत भाः ।
शकुन्तलां पतिकुलं विसृज्य स्वधर्मिणीं स्वाम्भ्यं । कृतः ।

अथैव हि कल्याणं प्रकीर्तय एव

तामस्य संप्रपद्य परिग्रहीतु ।

ज्ञातो भगवत् त्रिशदः प्रकाशं

प्रत्यर्पितान्यास इवान्तरात्मा ॥ १७ ॥

। इति विष्णुसंज्ञा सधे ।

॥ चतुर्थी ऽङ्कः ॥

नत. प्रविष्टायास्तस्यो राजा विदूषकश्च ।

विदूषकः । किं दाया । भो भो वयस्स । संगीदसालत्तरे अवधा
णां देहि । कलविमुदाह गीदीह सरसंज्ञाया सुषोमिदि । ताणं ।
तत्तहोदा कंसवदित्रा वपापरिअद्यं करेदित्ति ।

राजा । तूष्णीं भव । पावदाकर्णयामि ।

। आकाशे गीता ॥

अदिणवगकुल्लोत्तुवां, तुमं,
तहं परिचुम्बिअ चूअमत्तरिं ।
कमलवसइमेत्तणिव्बुदो

गडुअर विम्हरिदासि णं कलं ॥ १८ ॥

राजा । अहं रागपरिवाहिनी गीतिः ।

विदूषकः । किं दाव गीदीह अवगदो अवचरत्था ।

राजा । पित कृत्वा । सकृत्कृतप्रणयो ज्यं जनः । तदस्या देवो व
सुमतीगत्तराण मरुडपालम्भनं गतो जस्मि । सखि माठव्य । मद
चनाहुच्चतां कंसंपदिका । तिपुणामुपालब्धो जस्मीति ।

विदूषकः । जं भव आणवेदि । इत्याय । भो वयस्स । गही
दस्स ताए परकीएहिं, कृत्योहिं सिरुणउए ताडीअगाणास्स अक्खन्ताए

वीदराग्रस निग्र एतिय दणिं मे माकला ।

राजा । मच्छ । नागरिकवृत्त्या राजायेना ।

विद्वपका । का गई । इति निष्क्रान्त ।

राजा । प्रामता । किं नु खलु गीतार्थमाकाङ्क्षितानविरहादता

अपि चानवद्वत्कामिता जस्मि । अथवा ।

रम्याणि वीक्ष्य मधुरांश्च निजमपि शब्दा

न्यर्पुत्सुमीभवति यत्सुखिता अपि ततः ।

तच्चतसा स्वरति नृनमन्त्रापूर्व

नाभस्थिराणां अगनातरमाह्वानि ॥ ११ ॥

इति पञ्चमोऽङ्कः ।

ततः प्रविशति कश्यपी

कश्यपी । अहो नु खलु वीदणीमवस्थां प्रपन्ना जस्मि ।

॥ - आचार इत्यवहितेन मया गृहीता

या वज्रपाटिरवरोधगृहेषु राधाः ।

काले गते बहुतिथे मम सख्यं ताता

प्रश्नानविलम्बितैरवन्तम्बनार्थ ॥ १०० ॥

भोः । कामं धर्मकार्यमनातपात्वं दत्तस्य । तथापीदानीमिव धर्ममिना

इत्थितस्य पुनरुपराधकारि काव्यजिप्यागमनमस्मि नोत्सुकं निवृदि

तुं । अथवा । अविश्रामो ज्यं लोकतत्त्वाधिकारः । कतः ।

॥ भानुः सकृन्मृतात्तरङ्ग एव

रात्रिदिवं गन्धर्वः प्रयाति ।

शेषः संदवाहितभूमिभारः

पञ्चाशद्वत्तराप धर्म एषः ॥ १०१ ॥

यावन्नियोगमनुतिष्ठामि । परिश्रम्यावलाभा च एष देवः ।

प्रज्ञाः प्रज्ञाः स्वा इ न सार्वभौमस्य

निषेवन्त शास्तमना विविक्ताः ।

पृथानि संचार्य रविप्रतप्तः

शीतं दिव्या स्थानमिव द्विपेन्द्रः ॥ १०२ ॥

उवाच । ज्ञायतु ज्ञायतु देवः । एतं प्लुतु हिमवतां गिरिरूपत्यकार
एण्यसिन्धः काश्यपसंदेशमादाय सस्त्रीकास्तर्पिस्विनः संप्राप्ताः । ध्रुवा
देवः प्रगाणः ।

राजा । तावत् । किं काश्यपसंदेशकारिणः ।

कशुकी । अथ किं ।

राजा । तेन हि मदचनार्दिज्ञाप्यतामुपाध्यायः सामरातः । अमुं
नाश्रमव्रासनः श्रान्तिन विधिना सत्कृत्य स्वयमेव प्रवणयितुमर्हन्ती
ति । अकम्प्यत्र तपस्विदर्शनाचिते प्रदर्शे स्थिताः श्रान्तिपालधामि ।

कशुकी । यदाज्ञापयति देव्यः । इति निष्क्रान्तः ।

राजा । उवाच । वञ्चवति । अग्निशरणमार्गमादिशय ।

प्रतीक्षारी । इदो इदो देवो ।

राजा । परिकावति । अधिपारणेदं गिर्या सर्वः प्रार्थितमर्थमधिगम्य सुखी
मंप्रयते ज्ञातुः । राज्ञां तु चरितार्थता दुष्योत्तरैव ।

श्रौत्सुपयमात्रमत्रसादयति प्रतिष्ठा

क्लिप्नाति त्वय्यपरिपालनवृत्तिरेनं ।

नातिश्रमापनयनाय न च श्रमाय

राज्यं स्वरुस्तधृतदण्डमिवातिपन्न ॥ १०३ ॥

वैतालिकौ । विजयतां देव ।

प्रथमः ।

स्वराज्यानिर्गमन्तायः विजयते लोकादन्तोः

प्रातांदिवमथवा ते वृत्तिरिव्यविवध ।

अनुभवति हि मूर्धा पादपस्तीत्रमुत्तं

शम्यति परितापं हामया संश्रिताना ॥ १०३ ॥

द्वितीयः ।

नियमपास विमार्गप्राम्थतानात्तदण्डः

प्रणमयासि विवादे कल्पसि रुद्धपाय ।

अतनुषु विभवेषु ज्ञातयः मनु नाम

त्ययि तु परिसमाप्त व्यपुस्त्यं प्रदानां ॥ १०४ ॥

राजा । एते क्तात्तमनसः पुनर्नवीकृताः स्मः । रति-वर्जितावपि ।

प्रतीक्षारी । अदिष्टावमंगलक्षणससिरीयो तंणिदिदकोमंभायु ग्रैभ

संरणास्तित्ना । आरुद्धु देवो ।

राजा । अतः यदि सनासावकम्प्री निष्ठति । वेत्रवति । किमुदिश्य भगव

ता काण्येन मत्सकाशमपम प्रेरिताः स्मः ।

किं तावद्वतिनायप्रोक्तपसां । रति-वर्जितावपि ।

अन्तराण्यचरेषु केनाचिद्वत वाणिधससद्वितं ।

आहोस्वित्प्रसाधो ममापचारतविष्टम्भितो वीर्या

मिन्धावृद्धवद्वप्रतर्कमपरिच्छेदाकृतं मे मनीः ॥ १०६ ॥

प्रतीक्षारी । सुग्रिदणान्दिणां इसांयां देवं सभाद्वद्व आग्रदत्त

तर्कमि ।

ता प्रविष्टान्ति गौतमीयहिता प्राकृत्यालो पर वता सु. ग. पर चैषां कसुकी पुराहितम् ।

शङ्खी । इत इतो भवतः ।

शार्ङ्गवः । शार्ङ्गवः ।

महाभागः कामं नश्यतिर्निःशयितिरक्षो

न कश्चिद्विनिर्वाणप्रशमयकस्तो ऽपि भवति ।

नशादीं शश्वत्परिविताविभक्तन मनसा

जनाकीर्णं मन्यं दुल्लव्यप्रसीतं गृह्णमिव ॥ १०७ ॥

शार्ङ्गवः । जने । भवान्युप्रयशादित्थंभूतः सवृत्तः । अरु
मपि

अभ्यन्तमिव स्नानं शुचिरशुचिमिव प्रबुद्ध इव सुप्तं ।

वदमिव स्वीरगतिर्जनमिह सुखमङ्गिनमवैमि ॥ १०८ ॥

शकुन्तला । निमित्तं गृह्यति । अस्महे । किं मे वामदरं शयणं
द्विष्णुरदि ।

गोतमी । नाद । पडिरुदं अमङ्गलं । सुखादं दे गतकालदे
प्रशयो वितरन्दु । इति परिश्रममि ।

पुरोहितः । रातानं निर्दश । भो भोस्तपस्विन । अभावत्रभवान्व
णीध्रमाणां रक्षिता प्रागेव मुक्तासनो वः प्रतिपानायति । प्रणय
तेन ।

शार्ङ्गवः । भो गृहाव्राह्मण । काममेतदगिनन्दनोपे । तथा
पि वयमत्र मध्यस्थाः । कुतः ।

भवन्ति नम्रास्तव्यः फलार्गमे

नवाम्भुभिर्गुरिवित्तम्विना वना ।

अनुदताः सत्यपुण्या समृद्धिभिः

स्वभावे एवैष परोपकारिणां ॥ १०९ ॥

प्रतीक्षारी । देव । पसुणाकुलवगा दीर्घाति । आणाम । विष्मन्
कड्गा इसांश्चा ।

राजा । प्रकृत्या दृष्टा । अथाप्रभवती ।

का स्विद्वगुणनवती नार्तिपरिस्फुटशरीरत्वात् ।

मध्ये तपोधनानां कसित्वमिव पाण्डुपत्राणां ॥ ११० ॥

प्रतीक्षारी । देव । कुटिलमन्त्रो । परिदा ए न त्वदा प
सर्दि । एं देसाणोवा उगा से अमिदो लक्कायादि ।

राजा । भवतु । अनिर्वर्णनीयं परकल्पनं ।

शकुन्तला । उत्पत्तिरुवा । मात्तम । दिग्गय । कि एव्यं वर
सि । अङ्गज्जाम्म भव्यं आणमिदं शीरं दत्तं क्षादि ।

पुरोहितः । पते गच्छ । एतं विधिवद्दार्चितास्तापस्विनः । कश्चिद्दे
षामुपाध्यायसंदेहः । तं देवः शान्तमर्हति ।

राजा । अत्यक्षितां शिरा ।

ऋषयः । उत्तुगुण्य । विदुगस्त्र राजानु ।

राजा । सर्वानामवादेय ।

ऋषयः । इष्ट्वा पृथ्वस्त्र ।

राजा । अपि निर्वर्णितप्रसा मन्त्राय ।

ऋषयः ।

कुतो धर्माविद्यावधः सतां रजितारि त्वयि ।

तमात्तपति धर्माशौ कथमाविर्भाव्यति ॥ १११ ॥

राजा । अर्थवान्भवतु मे राजशब्दः । अथ भगवत्प्राज्ञे कानुग्रहाय
कुशली काण्वय ।

ऋषयः । स्वाधीनकुशला सिद्धिमन्तः । स भवत्तमन्त्रमयप्रश्नपुर्व

। किमिदं नाहं ।

राजा । । वमाणाप्यति भगवान् ।

शार्ङ्गरवः । गन्धर्वमममादिमां गदीयां दुहितरं भवान्प्राप्यते ।

तन्मया प्रीतिभता सुवयसनुज्ञानं । कुतः ।

। नमस्कृतां प्रायसरः स्मृतां जसे य

शकुन्तला मूर्तिमती न मत्क्रिया ।

सन्नाभस्तु यशुणे अवृत्तः

चिरस्य वाचं न गतः प्रजापतिः ॥ ११२ ॥

नदिदानीमापन्नसत्त्वा प्रतिगृह्यतां सद्भर्मचरणेभ्यः ।

गौतमी । यत्नः । किंपि वत्तुकामाहं । ए म वयसावसरो
ग्रत्यः । कदांते ।

। पात्रेकिकदो गुरुग्रणी इमाह पात्रु पुच्छिरो बन्धुग्रणी ।

एकं एव चरिह भणामि किं एकं एकस्त ॥ ११३ ॥

शकुन्तला । भगवन् । किं पुत्रु अद्वाउता भणादि ।

राजा । किमिदमुपन्यस्तं ।

शकुन्तला । भगवन् । पावश्रान्तु वयसावसासो ।

शार्ङ्गरवः । किमिदं नाम । भवन् एव सुतरां लोकावृत्तान्त
निष्ठाताः ।

११४ सतीमणि ज्ञातिकुलैकसंश्रयां

जनां ज्यथा भर्तृमतीं विशङ्कते ।

अतः समीपे परिणेतुरिष्यते

तदप्रियापि प्रमत्ता स्वबन्धुभिः ॥ ११४ ॥

राजा । किं चात्रभवती मया परिणीतापूर्वा ।

शत्रुस्तला मन्त्रिणः । आत्मगतं । किञ्च । एषा दे आगच्छ ।
 शार्ङ्गरवः । किं कृत्वा कार्यद्वेषो, धर्मं प्रति । अभ्यासना कलाविद्या ।
 राजा । कुत्सा अभ्यासकल्पनाप्रसङ्गः ।
 शार्ङ्गरवः । मूर्खत्वं विवक्षाः प्रायेणैश्वर्यमनसु ।
 राजा । विशेषणाभिहितो अस्मि ।
 गौतमी । ज्ञानं । मूर्खत्वं मा लज्ज । अत्रापि हंसं दाव दे आ
 उपठ्ठां । तदो तुमं नृणां अद्भुताणामसदि । इति कर्म । अर्था
 राजा । अभ्यासनां विवर्णः । अभ्यासः ।

इदमुपनतमर्थं त्वमस्तिष्ठमाणि

प्रश्नपरिगृहीतं राज्ञे त्वं व्यवस्यन् ।

अमर इव विभात कुलमलरत्नपारं

न खलु च परिभातं नैव शङ्कामि कृतुं ॥ ११५ ॥

इति चिन्तायामित्यतः ।

प्रतीक्षारी । अहो धर्माद्वेक्त्वदा भद्रिणा । ईदृशं ताम् मुहो
 वणदे वृत्तं दक्षिण को अगो चिन्तारिदि ।

शार्ङ्गरवः । भो राजन् । किमस्ति दास्यमायते ।

राजा । भोस्तथाधनाः । चित्तयत्नां न खलु स्विकर्णामत्रम
 त्रत्याः स्मरामि । तत्त्वशामिमामभिव्यक्तसत्यलक्षणां प्रत्यात्मानं क्षत्रि
 णामाशङ्कमानः प्रतिपत्स्ये ।

शत्रुस्तला । अभ्यासः । अद्भुतास्त परिणष्ट एव संदेहो । कृतो
 नृणां मे दूराद्विराट्प्राणी आस्ता ।

शार्ङ्गरवः । मा तावत् ।

कृताभिर्मर्शामनुमन्यमानाः

सुतां त्वया नाम मुनिर्निर्गन्धः ।

मुष्टं प्रतियारुह्यता स्वमर्थ

पात्रीधृती दम्पुरिवासि येन ॥ ११६ ॥

शारदतः । शार्ङ्गरत्नम् । विरग त्वमिदानीं । शकुलान्ते । वृत्तव्यामुक्त
मस्माभिः । सोऽयमत्रभवान्वनवमाह । दीयतामस्मै प्रत्ययप्रतिवचनं ।

शकुलान्ता । अथार्थः । । इमं अवत्यन्तरं गदे तारिसे अणुराह किं
वा सुमरिदेण । अन्ता दामिां सांघणीश्रोति ध्रुवसिद्धं । प्रकाशं । अद्भुत
उत्त । उत्तमोत्तमः । संसर्गदे दामिां परिणह ण एसां समुदाधारं ।
पारव । ण ज्ञेत्तं गाम दे तह पुरा अस्समपदे सदावृत्ताण
हिअयं इमं दामिां समअपुण्यं पत्तारिअ ईदिसेहिं अवत्तरिहिं पद्मा
चवित्तदं ।

राजा । शान्तं पापं ।

अपदेशमायित्तमितुं विमीक्षणे जननिमं च पातयितुं ।

कृतंकोषेव सिन्धुः प्रसन्नगम्भस्तद्वतर्हं च ॥ ११७ ॥

शकुलान्ता । रुद्र । अहं परमत्यदो परपरिगृहसङ्घिणा तुह
एव्वं पउत्तं । तां अदिणाणाण इमिणा तुह आसङ्गं अवणाइस्सं ।

राजा । उदारः कल्पः ।

शकुलान्ता । सुहायानं परामुखा रुद्रा रुद्रा । अद्भुतीअग्रसुणा मे
अद्भुती । इति राजापरं गौतमीवेष्यते ।

गौतमी । गूणां दे सकावदारब्धत्तरे सचीतित्थसलित्तं वन्दमा
णाह पञ्चदं अद्भुतीअग्रं ।

राजा । सलित्तं । इदं तत्प्रत्युत्पन्नमृति स्त्रैणामिति धेदुच्यते ।

शकुन्तला । इत्थं दाव विदिता तसदं यदुत्तमां । अबर दे
कदिसिं ।

राजा । आतन्त्राभिधानां यन्त्रं ।

शकुन्तला । एषं दृक्कसिं दिव्यदे पांशांतवामादव पान्तिपाय
तभाअणगअं उअअं तद कथं संपिण्हिदं व्यासि ।

राजा । शृणुमस्तावत् ।

शकुन्तला । तवत्तमां सो मे पृत्तविदथो दीक्षापदा पाग मिथ
पोदथो उवहिदो । तुष्ट अयं दाव पागं पिअउत्ति अणआंमपा
उवच्छन्दिदो उअरण । ए अण दे अपरिअआदो कथ्यव्भासं उअग
दो । पच्छा तसिं इत्थं मष्ट मसिंदे मातन्त्रं पाण विदो पाण
ओ । तदा तुमं इत्थं पदसिंदोमसि । राव्यो सगन्धसु विस्ससाद ।
द्वेवि इत्थं आरण्हति ।

राजा । इवमादिभिरात्मकार्यनिवर्तिनीनामनृतमपवादाभिराकण्य
न्तं विवर्षणः ।

गौतमी । मरुताग्र । एषं अरुहास इत्थं मातदं । तवोवणसंव
डिदो अणाभिणो अयं जणो कइदवसस ।

राजा । तापसावृद्ध ।

स्त्रीणां गणिद्वितापठत्यमगानुषोपु

संदृश्यत किमुत याः प्रतिब्रंथवत्यः ।

प्रागलरित्तगणनात्स्वमपत्यजात

गन्धेद्विज्ञः परभूता प्यत्तु पोपगलि ॥ ११८ ॥

शकुन्तला । एषं । अणद्व । अत्तणा दिव्ययाणुगाणि पव
सि । को दाणिं अणो धम्मकअुअप्यंसिणो तिणच्छणवूअंअमस

तव अणुवदं पडियदिस्सदि ।

राजा । मयागमं संदिग्धवृद्धिं मां कुर्वन्नैतव इत्यास्याः कांशो
लभ्यते । तथा कानया

मयेव विस्मयादाशुणां वत्तवृत्तौ

वृत्तं रक्षप्रणयमप्रतिपद्यमान

भेदाद्वचोः कुटिलवारतिन्नोहितान्ना

भां शरासनांमथानिरुप्य स्मरन् ॥ ११९ ॥

राजा । मद्र । प्रथितं दुष्प्रतस्य चरितं । तथापिदं न लज्जये ।

शकुन्तला । सुदृढं हव अत्त सन्ध्दचारिणी विदम्हि । ता
अहं इमम् पुरुषं सप्यच्छरा मुहुमङ्गणां किञ्च अद्रिअविमस्स कल्यन्ना
मं उत्तगदा । इति पदान्तेन नृपयाद्याय शेरिणि ।

शार्ङ्गरेवः । इत्यमात्मकतमपरिरुत चापलं दहति ।

अतः परीक्ष्य कर्तव्यं विशेषात्मगतं रक्षः ।

अज्ञातकृत्येष्वेवं वरीभवति साकृदं ॥ १२० ॥

राजा । अयि भोः । किमत्रभवतीप्रत्ययाद्व्यास्मान्मांयुतादासान्नरण
निणुथ ।

शार्ङ्गरेवः । मासूय श्रुतं भवतिरधरांतरं ।

आ जन्मनः शास्त्रमणित्तो य

स्तस्याप्रमाणं वचनं जनस्य ।

परातिमंभानमधायते ये

विर्तानि ते सन्तु किल्बासवाच ॥ १२१ ॥

राजा । भोः सत्यवार्दिन । अभ्युपगतं तावदस्मात्मेव । कि
पुनरिमागमिसंधाय लभ्यते ।

शार्ङ्गवः । विनिपातः ।

राजा । विनिपातः पौरवः प्रार्थित इति न श्रद्धेयस्तत् ।

शार्ङ्गवः । शार्ङ्गवः । किमुत्तरेण । अनृष्टतो गुणैः संदेशः ।

प्रोक्तान्वर्तमानं त्वं । तत्रापि प्रोक्तः ।

तदपि भवतः काला न्येता विनां शरणा वा ।

उपपन्ना हि दारुणं प्रभुता सर्वतोमुखी ॥ १२२ ॥

गन्तमि । गन्हाग्रतः ।

विष्णुसहस्रनाम

शक्त्या । कश्चिद् दमिणा । किद्वया विप्रलम्बम् । तन्महि
मे परिद्विषां परिभ्रष्टम् । तत्रापि तत्रापि ।

गन्तमि । किं न । वच्छ सङ्गच्छ । अणुगच्छदि इत्यं क्व गो
वरुणपरिद्विषां मङ्गलता । पञ्चादिसप्तम भक्त्या किं ता मे
प्राप्तिश्च करिष्यति ।

शार्ङ्गवः । किं पुरोगागे स्वातन्त्र्यमवलम्ब्यम् ।

शक्त्या तत्रापि तत्रापि ।

शार्ङ्गवः । शक्त्या ।

किं यदि यथा वदति जितियस्तथा

त्वमसि किं विनुरक्तकल्या वया ।

अथ नृ वारस शुचि व्रतमात्मनः

पतिकुलं तव दायमाणि क्षमं ॥ १२३ ॥

निद्र । साधयामो वयं ।

राजा । भोस्तपस्विन । किमत्राप्रतो विप्रलम्बं । कुल ।

कुमुदस्यैव गशाङ्कः मयिता बोधयति पद्मान्यव ।

वशिनां हि परपरियहसंज्ञायवतागुर्वी वृत्तिः ॥ १२४ ॥

शाङ्करवः । यदा तु पूर्ववृत्तमन्यमङ्गादस्मृता भवान् । तदा
कथमधर्मभीतिः ।

राजा । भवत्संगत्वात्र गुरुभाषत्वं गच्छामि ।

मूढः स्यामहंमया वा वदन्मिथ्यानि संशय ।

दरत्वागो भवान्यादां परस्पास्यर्शपांशुन्तः ॥ १२५ ॥

पुराहितः । विचार्य । इति तावदेवं क्रियतां ।

राजा । अनुशास्तु मां भवान् ।

पुराहितः । अत्रभवती तावदा प्रभावादग्मदृक् तिष्ठतु । कुत
इदमुच्यत इति चेत् । त्वं साधुभिर्गदितः । प्रथममेव चक्रवर्तिर्न
पुत्रं तनयिष्यसीति । स चेन्मुनिदोहितस्तत्पुत्राणां पण्डां भविष्यति ।
अगिनत्त्य शुद्धात्तमनां प्रवेशयिष्यमि । विपर्ययं तु पितृरस्याः समो
पनयनमवधारितमेव ।

राजा । यथा गुरुभा रंचते ।

पुराहितः । वत्से । अनुगच्छ मां ।

शकुन्तला । भगवदि वशुके । हेतु मे विवरं । इति हृदन्ती पत्न्य

ता । निष्क्रान्ता । तत् परोक्षं । १२७ तत्परिभाषा । १२८ ॥ प्राप्यवृत्तिरनुत्ति शकुन्तलात्तमवयव विचारयति

नपथ्य । आश्चर्य ।

राजा । आश्चर्यं किं नृ पत्तु म्यात् ।

पतिवत्

पुराहितः । पतिवत् देव । अदुतं पत्तु संवृत्तं ।

राजा । किमेवं ।

पुरोहितः । देव । परावत्तपु कावशिष्यम्
सा निन्दनी स्वानि भाव्यानि वृत्ता
बाहूत्तप कान्दतुं च प्रवृत्ता ।

राजा । किं च ।

पुरोहितः ।

स्त्रीसंन्यासं चाप्सस्तृतीयगारा

दुत्कर्ष्यनां ज्योतिरेकं जगत् ॥ १२६ ॥

। सर्वे द्वितीयं प्रपत्ति ।

राजा । भगवन् । प्रागपि सा जस्माभिर्यः प्रत्यादिष्ट एव ।
किं नृणां तर्केणान्विध्यते । विप्राम्यन्तु भवान् ।

पुरोहितः । विप्रोऽथ । विप्रयस्व । इति निष्क्रान्तः ।

राजा । चेत्रवति । पर्याप्तलोऽस्मि । शयनभूमिमार्गमदिशय ।
प्रतीकुरी । इदो इदो देवा । इति प्रस्थितः ।

राजा ।

कामं प्रत्यादिष्टां स्मरामि न परिग्रहं गुनेस्तनयां ।

चलवतु ह्यनानं प्रत्यापयन्तीव मां हृदयं ॥ १२७ ॥

॥ इति निष्क्रान्तः सर्वे

॥ पक्ष्या उड्डः ॥

॥ ततः प्राप्तिर्नामिकं शालां पञ्चाद्विपुलमादाय रक्षिणी च ॥

रक्षिणी । ताडयिष्य । अले वाम्बिलम् । कर्तुं । कर्तुं तुष्ट
दृष्टं मणिवन्धणविगणामहेष्टं त्वाग्रकीष्टं अहुत्तीष्टं शमाशादिए ।
पुरुषः । मोक्षार्थितम् । पञ्चाद्विपुलं भावमिष्टं । अर्द्धं पां ईदृश
कम्मकाली ।

प्रथमः । किं तु शोकणे व्यक्तोक्ति कतिअ' रणा पडिग्गकि
दिषो ।

पुरुषः । शुणुह दारिणं । अर्द्धं शकावदालम्बन्तन्वाशी धी
वले ।

दिनायः । पाडयन्ता । किं अर्द्धं ज्ञादी पुच्छिदे ।

शालः । लूअ । कर्तुं सच्चं अणुकमेण । भा पां अत्तरा
पडिबन्धक ।

उगौ । तं आवुत्ते आणवदि । कर्तुं ।

पुरुषः । अर्द्धं ज्ञातुगालादीकिं मच्छन्धणोवादि किं कुटुम्बम
लाणं कलामि ।

शालः । अल्ल । विसुद्धं दारिणं आजीवो ।

पुरुषः । भद्रा । मां एव्वं भण ।

शक्यं किल ते विणिगन्दिह

ण दु दे कम्म विवन्ताणीअह ।

पशुमाल्लसकम्म दान्तुणे

आणुकम्पांसह एव्व शातह ॥ १२८ ॥

श्यालः । तदो तदो ।

पुरुषः । एकाणिं दिअणे खाण्णो लोहिअमक्के मए कपिदे
जाव । तएण उदल्लज्जल्ले एदं लदणभाण्णुत्तं अज्जुत्तोअअं दीवज्जं । प
च्चा अरुक्के णे विअयाअ हंणअतो गहिद भाव्वाभण्णोहिं । माल्लह
वा । मुञ्चक वा । अअं णे आअमत्तुत्ते ।

श्यालः । ज्ञाणुअ । विसागन्था गोदादी मच्छन्धो एव्व णि
स्संसअं । अज्जुत्तोअअदंसाणं से विभरिसिदद्धं । राउत्तं एव्व ग
च्छामो ।

रक्षिणौ । तदं ।

श्यालः । गच्छ अरे गाण्डभेदअ ।

। सर्वे परिक्रामन्ति ॥

श्यालः । सूचय । इमं पुरदुवारे अपमत्ता पदिचाल्लह । ता
व इमं अज्जुत्तोअअं अरुगमणा भट्ठिणा णिर्वोदअ तदो सासणां प
डिच्छिअ णिकमामि ।

उभौ । पविशतु आबुत्ते शामिपशादण्ण ।

निष्क्रान्त श्याम ॥

प्रथमः । ज्ञाणुअ । चित्ताअदि णु आबुत्ते ।

द्वितीयः । णां अवणल्लोवणप्यणीअ लोआणी ।

प्रथमः । ज्ञाणुअ । फुल्ललि मे कत्था इमण्ण लल्लण्ण शुभाणा

पिण्डं । इति पूर्णं निर्दिशति ।

पुरुषः । पा अलुक्दि भवि आल्लामाल्लो भविटुं ।

द्वितीयः । विलोका एणं शम्भुणं शामो पत्तकत्थे लाल्लामाल्लो
पाडच्छिद्य इदोमुक्ते दक्खीयदि । गिद्धवल्ली भविण्णाणि । शुणो
मुक्ते वा दक्खीयणाणि ।

परिणम

श्यालः । सूत्रम् । मुत्तं एसा शाल्लोअत्तावी । उव्वणो
किल्ल अयं अङ्गल्लाययस आअमा ।

मूचकः । अहं आनुत्त भगादि ।

द्वितीयः । एणं शम्भुणं पत्तिथिअ पदिगिबुत्ते । इति पूर्णं पत्ति
अहं कर्त्तव्यं ।

पुरुषः । श्याल प्रणम्य । भटा । अहं कील्लिणे म आत्तिवि ।

श्यालः । एसा भट्टिणा अङ्गल्लाययसुत्तमंमंमं पत्तादाल्लि दाल्लि
दो । इति पूर्णं पत्ति ।

पुरुषः । शम्भुणं प्रणम्य । भट्टकेण आणुग्गदिदंदि ।

मूचकः । एणं श्याल आणुग्गदे । ने शल्लादा अव्वणल्लिअ दल्लि
कुन्धे पाड्ढाच्चिदे ।

नानुकः । आनुत्त । पत्तिदोणं कहेदि । नेण अङ्गल्लायय
भट्टिणो शम्भुणं कहेद्व्यं ।

श्यालः । पा तस्सिं मल्लारुक्ते रदणं भट्टिणो अङ्गुमदत्ति तक्कमि ।
तस्स दंसोणं भट्टिणो अङ्गिमदं नणो सुमरिदो । मुद्धत्तयं पत्ति
दिगम्भीरोवि पत्तारसुणाअणो आसि ।

मूचकः । शविदं श्याल आनुत्तिण ।

जानुकाः । एषां भाषादि । इमं तद् भाषाभित्तुणांति ।

इति प्रथमाध्यायः पद्यम् ।

पुरुषः । भद्रालके । इदा अदं तन्मन्त्राणां भ्रमाणागत्य कोद ।

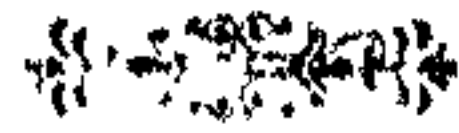
जानुकाः । एतन्ते तुदुर्ग ।

श्यालः । धान् । मन्त्राणां तुमं निग्रयव्यस्सको ताणि मे संयु
तां । कादम्बरसक्तिकर्मा अम्बुजाणां पदमार्गाददे इच्छायां । ता
सांष्टिआणां हृत्वा गच्छामा ।

सर्वे । तद् ।

इति प्रथमाध्यायः पद्यम् ।

॥ प्रवृणक्तः ॥



॥ मत् प्रविशन्तामप्यमृतं ॥ लभते नमोऽस्तु ॥

सान्त्वयता । गित्वातदं मरु पद्मायापिच्यत्तणिडत्तं अचक्षुःशतित्यसं
गित्वा । तत्र सादृशाणाम् नमिषाप्रकालोत्ति संपदं इमसा राक्षसि
णो उदत्ते पञ्चकर्माक्षिम् । णं मेपायासंबन्धेण सरीरभूदा दणिं
मे गउन्दत्ता । तादृश दुःखदोषमिन्नं आदिहपुत्र्यम् । समन्तादवलोक्य ।
किं णुक्खु उदुक्खुवन्नि गिरुक्खुवारम्भं विअ इदं राअउलं दोसइ ।
अत्थि मे विदुवो पाणात्तणं मत्तं परिणाडुं । किंउ सहीए आ
इरो मरु माणइद्वी । इह । इमाणां एव उद्वानपात्तिआणं
तिरुक्खारिणोपरिक्खणा पम्सापोरेवात्ताणी भविअ उवत्तम्भिसं । इति
तत्तनाज्जोत्तं स्थितं

॥ मत् प्रविशन्तामप्यमृतं ॥ लभते नमोऽस्तु ॥

प्रथमा ।

आअम्वरुअपाटुर वसन्तमासस्स जीअसव्वस्स ।

दिहंसि चूदकोरअ उडुमङ्गलं तुमं पसाएमि ॥ १२१ ॥

द्वितीया । परुडदिह । किं एआइणो मत्तोसि ।

प्रथमा । मरुअरिह । चूदकाल्तिअं देविअ उम्मन्तिआ परुडदि
आ कोदि ।

कण्ठेषु स्फूर्तितां गंत एषि शिशिरं प्रेक्ष्योक्तिमान् स्तुतं
शङ्खे सन्निर्गत स्मरता एषि चाकलसूयार्णवकृष्णं पारं ॥ २३२ ॥

उभे । गालिय संदहो । महप्यहायां राहसी ।

प्रथमा । अज्ज । काति दिअह्माइं अम्हाणां गित्तावसुणा राहिणा
भट्ठिणा पाअमूलं पासदाण । इत्थं च गां पमदवणास्स पाल्लणाक
म्मं समप्यइं । ता आअत्तुअराए अस्सुदपुव्वो अम्हाइं एसो वुत्त
हो ।

कच्चुकी । भवन्तु । न पुनरेवं प्रवर्तितव्यं ।

उभे । अज्ज । काट्ठकल्लं गा । जइ इमिणा जणोण सोदव्वं ।
कहेइ भयं । किंणिअत्तं भट्ठिणा अमत्तूसवां पडिसिद्धो ।

मानुगती । उस्सर्वाप्यथा खु मणुस्सा । गरुणा आरणोण को
दव्वं ।

कच्चुकी । अडुल्लीभूतमेतत्किं न कथ्यते । कितन्नभवत्येः कर्ण
पथं नायातं शतुत्तन्नाप्रत्यदिशकौत्तोनं ।

उभे । सुदं राट्ठिणां मुहादां ज्ञान अडुल्लीअअदंसाणं ।

कच्चुकी । तेन ह्यल्पं कथयितव्यं । मंदं च खलु स्वाडुल्लोमवाद
र्शनादनुमृतं देवेन । सत्यमूढपूर्वा मया तत्रभवती रहसि शकुल
त्वा मोहात्प्रत्यादिष्टेति । तदा प्रभृत्येव पश्चात्तापमुपगतो देवः ।
तथा हि

रम्यं द्दष्टि यथा पुरा प्रकृतिभिर्न प्रत्यहं सेव्यते

शय्याप्राशविवर्तनिर्विगमयत्युन्निद्र एव क्षपाः ।

दक्षिणैर्न ददाति वाचमुचिनामलः पुरंभ्यो यदा

गोत्रेषु स्वात्ततस्तदा भवति च व्रीडाविलक्षश्चिरं ॥ १३२ ॥

सानुमती । पिअं मे ।

कच्चुकी । अस्मात्प्रभवतो वैगनस्यादुत्सव प्रत्याख्यातः ।

उभे । तुल्यम् ।

नेपथ्ये । एत एत भवं ।

कक्षुकी । कषा कषा अगे । इत एताभिवर्तत देव । स्वकर्मा
नृणीयतां ।

उभे । तद्व । इत निष्कान्ते ।

तत् प्रविष्टात् पञ्चात्रयप्रत्ययान्तो ह्यस्य नि । तत् प्रविष्टात् प्र

कक्षुकी । पञ्चात्रयप्रत्ययान्तः । प्रकृता सर्वाश्चर्यस्यसु । समर्पण्यत्वात्कालं
विशेषाणां । एतन्मत्स्यतो अत्र प्रियदर्शिनो देव । तथा किं
प्रत्यादिष्टविशेषमात्रेणैवापि विप्रदाश्रयितं
विभक्त्यावनयनमात्रेण वलम् आसाधयतापरिः ।
चित्ताज्ञागणप्रतामनयनस्तज्ञागुणादात्मनः
संस्कारोविभक्तो मरुतामिगित्व तांतां अयं नात्तद्वर्त ॥ १३३ ॥
सानुमती । राजानं पृष्ट्वा । तांतां अयं पञ्चादशात्रमांतांतां इमस्य
क्रिदे सञ्जदत्ता किलम्मादिता ।

राज्ञा । ध्यातागर्हं परिक्रम्य ।

प्रथमं सारंगमात्म्या विष्णोः प्रोक्तव्यं ज्यमानमपि सति ।

अनुशयद्विषांयदे कृतकद्वय संप्राप्तं विवृणुः ॥ १३४ ॥

सानुमती । तां इदिसाणि तव्यास्सणीष्ट भाग्यदेव्याणि ।

विदूषका । अपव्या । तद्विदो एसां भूयानि सञ्जदत्ताव्यादिणा ।

एता अणे । कद्वं चिकिच्छिद्व्यं भविर्सादिति ।

कक्षुकी । उपाय । जयतु जयतु देव । मरुतराज्ञ । प्रत्येवन्ति
ताः प्रमद्वयनभूमयः । यथाकागमध्यास्तां विनोदम्यान्तानि मरुतराज्ञः ।
राज्ञा । विजयति । मरुचनदमात्मभाषांयशुनं ब्रूहि । चिरप्रवो

धाव्य संभावितमस्माभिरथा धर्मासनमध्यासितुं । धत्प्रत्यवेन्नितं पीर
कार्यमार्गिणा । तत्पत्रगारोप्य दीयतामिति ।

प्रतीक्षारी । जं देवा भागावदि । इति निष्कान्ता ।

राजा । व्यातामन । चमपि स्वं निष्ठागपशृण्वं कुरु ।

कञ्जुकी । यदाज्ञापयति देवः । इति निष्कान्त ।

विदूषकः । किदं भवदा गिम्मक्किअं । संपदं सिसिगतवच्छेअ
रमणीए रमस्सिं पमदवणदेस अत्ताणं रमइस्ससि ।

राजा । वयस्य । रुन्ध्रापनिपातिनां जन्या इतो यदुच्यते । तद
व्याभिचारि वचः । कुतः ।

• भुनिमुताप्रणयस्मृतिरोधिना

मम च मुक्तमिदं तमसा मनः ।

मनमिज्जन सखे प्रकरिण्यता

धनुषि चूतशरश्च निवर्णितः ॥ १३५ ॥

विदूषकः । चिट्ठ दाव । आव इमिणा दण्डकट्टेणा कन्दप्यव्वा
हिं पासइस्सामि । इति दण्डकाभ्युपगम्य चूतशरं गतायामिच्छति ।

राजा । तस्मिन् । भवतु । दृष्टं ब्रह्मवर्चसं । सख । धोपविष्टः
प्रियायाः किञ्चिदनुक्तारिणीषु लतासु दृष्टिं विलोभयामि ।

विदूषकः । पां आसणापरिआरिआ चट्टरिआ भवदा संदिट्ठा ।
माहुवीमाण्डबे इमं वेत्तं अदिवाहिस्सं । तन्हिं मे चित्तफलअगदं
सकल्यल्लिहिदं तत्तकादीए सउन्दल्लाए पडिक्किदिं आणेहिंति ।

राजा । इदृशं रुदयविनोदस्थानं । तत्तमेव मार्गमादेशय ।

• विदूषकः । इदो इदो भवं ।

॥ उभौ परिक्रामतः । सानुपायानुगच्छति ।

विद्वेषकः । एतौ गोपसिन्धवापदं मन्त्राणां मातृप्रमाणं यो उच्यते
कार्त्तमणिज्ज्ञादाह निस्संसृजं मातृदं विमं गोपडिच्छदि । ता
पत्रिसिन्धु गणमादु भवं ।

॥ न्या प्रवेग १ प्रमाणं ॥

सानुमती । तदासंसिद्धां देविवसां शय्य रत्नाह पडिच्छदि ।
तदो से भत्तुणो वदुमुकं अणुसं निवेदुसां । ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

राजा । राज । सर्वमदानां मन्त्राणां प्रकृत्यायाः प्रमाणं कृत्यं ।
कथितव्यानां भवंत च । स भवान्प्रत्यादर्शवत्तायाः भत्तमणमृता
तो नासीत् । पूर्वमपि न तथा कदाचित्प्रमाणं नतं तत्रभवत्या ना
म । कचिदरुपि निरुत तानि त्व ।

विद्वेषकः । गोपसिन्धवापदं । किंतु सत्त्वं कर्तुं अवसाणे
उपा तुह परिकारविषयया एभा गोप भूदर्थोति आचकिदं ।
महति सिपिण्डवृदिणा तह एव गदादं । अरुवा भविदव्यदा
बलवदी ।

सानुमती । एवमं गदे ।

राजा । राजा । मन्त्र । त्रायस्व मां ।

विद्वेषकः । गो । किं उदं । अणुसं गोकुल ईदिस तुह । क
दावि साधुपारसा सांयवतव्या गो कर्ता ६ गो पवादवि गो
कम्पा गिरीयो ।

राजा । वयस्य । निराकरेणविल्लव्यायाः प्रियायाः समवस्थामनुस्मृ
त्य बलवदशरणो जसि । सा हि

इत प्रत्यादर्शास्त्वन्नमनुगन्तुं व्यवसिता

• मुहुस्तिष्ठत्युच्चैर्वदति गुरुणां गुरुगमे ।

पुनर्दृष्टिं व्यापप्रकारकत्वापार्थितवती

मयि कृते पातसाविप्रायव अल्पं दहति मां ॥ १३६ ॥

सानुमती । अम्हृक् । इतिमा सवद्वपदरा । इमस्स सदाव्यप
अहं रमानि ।

विद्वक् । मां । अतिथि मे तको । केणवि तत्तकोदी आया
सचारिणा गतिदन्ति ।

राजा । वः पतिदेवतागन्यः पारिमाष्टमुत्तकृत । भनक्ता किल
सायास्तं जन्मप्रतिष्ठेति श्रुतवानस्मि । तत्सकृचारिणोभिः सानी
ते कृतेति मे कदमभाशङ्कत ।

सानुमती । संमोक्षोक्तु विम्वृथापिहतां । ए पडिबोद्धा ।
विद्वक् । जड एव्यं । अतिथिबु समाश्रमो कालेण तत्तको
होए ।

राजा । कथाभव । *

विद्वक् । एवम् मादापदरा भत्तुविआथडाभवदे डोरुदरे दे
किपड पारेति ।

राजा । अगम्य ।

स्वप्नो नु माया नु मतिग्रमां नु
क्लिष्टं नु तावत्फलमेव पुण्यं ।

असांगित्वे तदतीतिमेत

मनारथानामतरप्रपाताः ॥ १३७ ॥

विद्वक् । मा एव्यं । मां अजुल्लीअअं एव्य पिदिसां । अ
वस्संभाविणां आचनपिहतां समाश्रमो होदिनि ।

राजा । भंगुलीक विमोक्षा । अय । इदं तावदसुत्तभस्थानथांश शो

चनीयं ।

तत्र सुचरितमङ्गुलीनां नृणाम्

प्रतानु ममैव विभाव्यता फलानि ।

अराणामप्यनारम्भानां तस्या

श्रुतमासि तत्त्वपदे तदङ्गुलीषु ॥ १३८ ॥

सानुगती । इदं अणोरत्ययमं यः । । मर्त्तं इष्टं । तत्त्वपदे
भवे ।

विद्वेषकः । वा । इष्टं तस्य मर्त्तं यत्तत्त्वपदे तत्त्वपदे
नृत्त्यसंसर्गं पाविता ।

सानुगती । अणोरपि तदङ्गुलीनां आचारिणे एषः ।

राज्ञा । श्रुता । तदा स्वानुगताय प्राम्यते वा तस्या मप्राप्यमा
ह । किर्यान्निर्गतायपुत्र प्रोत्पत्ति दास्यन्तीति ।

विद्वेषकः । तदा तदा ।

राज्ञा । पञ्चादिमां मुद्रां तदङ्गुली निवशयता नया प्रत्यभिदि
ता ।

दृक्कवत्तद्विद्वसे दिवसे मदात्

तथापि गणय मङ्गुली आवदत् ।

तावत्प्रिय मदयराधगदप्रवेशं

नेता ननस्तव समीपमृप्यन्तीति ॥ १३९ ॥

तच्च दारुणात्मना मया मोक्षानुक्तिं ।

सानुगती । इणोर्गोत्र्य अत्रतो विद्वत्ता विसंवादिहो ।

विद्वेषकः । करं वाप्यत्तवाप्यग्रस्त त्वादिग्रमन्तुस्त उदत्तम्भत्तले
आसि ।

राजा । शचीतीर्थं वन्दमानायाः सख्यास्ते रुस्ताद्गङ्गायातसि
परिग्रहं ।

विदूषकः । ब्रूयाद् ।

सानुमती । अदा दृष्ट्वा तवसिर्गाह सङ्दुल्लाह अधम्माभीरुणो
इमस्स राहसिणो परिणह संदेहो आसि । अरुवा । ईदिसो अ
णुराग्रो अहिणाण पक्खदि । करं विअ एदं ।

राजा । अपाल्ताप्स्य तावदिदमङ्गुलीयकं ।

विदूषकः । आगमात् । गर्हादि पाण पन्था उम्मत्तआणां ।

राजा ।

कथं नु तं बन्धुरकोमलाङ्गुलिं
करं विहायामि निमग्नमम्भसि ।

अथवा । अचेतनं नाम गुणं न लक्षये

न्मपेक्ष कस्मादवधीरिता प्रिया ॥ १४० ॥

विदूषकः । आगमात् । वरुं बुभुक्त्वाह खादइदव्वाम्भि ।

राजा । अकारपापरित्यक्तो । अनुशयतामहृदयस्तावदनुकम्प्यतामयं
जनः पुनर्दर्शनितं ।

प्रविश्य पट्टाक्षेपया चित्रफलकद्वरा

चतुरिका । इअं चित्तगदा भट्टिणी । इति चित्रपातयसं दर्शयति ।

विदूषकः । साहु वअस्स । मडुरावत्थाणदंसणिज्जो भावाणुण्य
वेसो । खत्तदि विअ मे दिट्ठा णिणुणअप्पदेसेसु ।

सानुमती । अम्मा एसा राहसिणां णिडणदा । ज्ञाणे । सही
अगदो मे वट्टदित्ति ।

राजा ।

गगत्वाभु न चिन्व म्यत्तिकानि तान्दग्यथा ।

तथापि तस्या लावण्यं रेखया किञ्चिदन्वितं ॥ १३१ ॥

सानुभूतो । सरिसं हृत्वं पच्छादावगहणा सिण्डुस अणवन्त
वस्सअ ।

विद्रूपकः । भो । दाणिं तिणि तत्तदादीयो दीरान्ति । मल्ल्या
ओअ दंसणीआओ । कदमा हृत्वं तन्वदीदी सञ्जदन्ना ।

सानुभूतो । अणानिणाकुनु- ईदिसस व्वरस मादोददी अयं
वणो ।

राजा । वं ताककलमां तर्कयमि ।

विद्रूपकः । तद्वणि । ता हसा सिण्डिल्लिकेसवन्थाणुव्वत्ताकुसुणिण
केसरंताण उन्निणासाअविन्दुणा व्वयणाण विसंमदो ओसारिआदि वा
दादिं अक्खंअणिणदत्तसणफलवस्स चूअपअवस्स दांस २ सिण्डिस
ता विअ आल्लदिदा । हसा सञ्जदन्ना । इदसाया सकाअरित ।

राजा । निपुणा भवान् । अस्त्यत्र म भावचिह्नं ।

स्विन्नाङ्गुलिनिविशो रेखाप्रान्तेषु दृश्यन्ते मलिनः ।

अश्रु च कपोतापरितं दृश्यमिदं वार्तिकं कृष्णम् ॥ १३२ ॥

चतुरिं । अधील्लिणितंमत्तिनास्थानं । तस्मादच्छ । वार्तिकं ता
वदानम् ।

चतुरिका । अज्जाभाठव्व । अवलम्ब चित्तापल्लभं । ताव आ
अच्छाणि ।

राजा । अहमवतदवलम्ब । हाव वणं करोति

॥ निष्क्रान्ता भवति ॥

राजा । अहं हि

सान्नातिप्रयागुपगतामपकाय पूर्वं

चित्रार्पितां गुहुरिमां बहुमन्यमानः ।

स्रोतोवद्वां पथिनि कामजलागतीत्य

जातः सखे प्रणयवान्मृगतृप्तिकार्या ॥ १४३ ॥

विदूषकः । गालगतं । एसां अत्तभवं गादिं अदिक्कामिअ मिअति
पिहग्रह संकत्तां । मक्काणं । भो । अब्बरं किं दत्तं लिहिदव्वं ।
सानुमती । ज्ञो ज्ञो पदेसां सक्कोह मे अदिहव्वं । तं तं आ
लिहिदुक्कामां भवं ।

राजा । श्रुयतां ।

कार्या सेकतल्लान्हंसमिथुना स्रोतावद्वा मालिनी

पादास्तामभितां निषणाहुरिणा गौरीगुराः पावनाः ।

शाखास्तम्बितवत्तुल्यस्य च तरां निर्मातुमिच्छाम्यधः

शृङ्ग कृष्णमृगस्य वामनयनं कण्डूयमानां मृगी ॥ १४४ ॥

विदूषकः । शाखास्तं । जक्क अहं देक्कामि । पुरिदव्वं पोण
चित्तपात्तअं लम्ब्यकुच्चाणं तावसाणं कदम्बोहिं ।

राजा । वयस्य । अन्यच्च शकुन्तलायाः प्रसाधनमभिप्रेतमत्र वि
स्मृतमस्माभिः ।

विदूषकः । किं विअ ।

सानुमती । वणावासस्त सौडमारस्तअ ज्ञं सरिसं भविस्सदि ।

राजा ।

१ कृतं न कणार्पितवन्धनं सखे

शिरीषमागण्डविलम्बिकेशरं ।

न चा शरच्चन्द्रमरीचिर्गोमः ।

मृणालसूत्रं रजितं यथाकारं ॥ १४५ ॥

विदूषकः । भो । किं णु तत्तद्दी रत्तकवत्त्वअभवत्त्वार्थाद्व्या
अगच्छन्तेण मुहं आवारिअ चरदचरद विअ तिदा । ॥ १४५ ॥ निज्य ।
॥ ॥ आ । एसो दासीएवुत्तो कुम्भसभापटवरो तत्तद्दीदीए वय
णं अहिल्लइदि मद्धअरां ।

राजा । ननु वार्यतंगार धृष्टः ।

विदूषकः । भवं एव अविणीदाणं साराय इगस्स वारणं प
रुविस्सादि ।

राजा । मुग्धं । अयं वाः कुसुमलताप्रियातांभ । किमत्र प
रिपतनविदमर्नुभवसि ।

एषा कुसुमनिषाणा तृणित्वापि सती गच्छन्मनुरत्ता ।

प्रतिश्रान्त्यति गधुर्करा न ज्वलु भवु विना तया विपति ॥ १४६ ॥

सानुमती । अज्ज अभिजादेकु एसो वारेदी ।

विदूषकः । पडिसिदाव्वा वागा एसा ज्ञादी ।

राजा । एवं भो न भि जागन्ति तिर्हासि । श्रूयन्तां तर्हि संप्र
ति ।

अस्ति ह्यबालतरपल्लवलोभनीय

पीतं मया गदगेमेव रत्नात्मकेषु ।

बिम्बाभरं स्पृशसि चन्द्रगर प्रियाया

स्यां कार्यागि कमलादरव्यन्धनस्थं ॥ १४७ ॥

विदूषकः । एव्वंतपल्लवाद्गडस्स किं ण भाइस्सादि । ॥ १४७ ॥ आ
गां । एसो दाव उभत्तो । अरुणि ठहस्स संगणा ईदिसअगां

विग्रह सवृत्ता । कण । भो । चित्तं क्व एहं ।

राजा । कथं चित्र ।

मानुमती । अहं हि दारिणीं अव्यभक्त्या । किं उवा नृकलित्वा
दायुभावी एसां ।

राजा । वयस्य । मिमिदगनुष्ठितं पौरिभाष्यं ।

दर्शनमुपगन्तुमवतः साक्षादपि तन्मयेन क्लृप्तेन ।

स्मृतिकारिणा त्वया मे पुनरपि चित्रमेकता काला ॥ १४८ ॥

इति बाणं विवर्त्त ।

सानुमती । पुल्यायविराजो अपुल्यां एसां विरहमागतां ।

राजा । वयस्य । कथमेवमविश्रान्तदुःखमनुभवामि ।

प्रजागरातिवलीभूतस्तस्याः स्वप्ने समागमः ।

वाप्यस्तु न ददात्येनां द्रष्टुं पित्रगतामपि ॥ १४९ ॥

सानुमती । सञ्चरन्ता पर्मादन्नदं तुह पञ्चादिसङ्कय सञ्चन्दन्ताह ।

पश्चिमा

चतुरिका । जडु जडु भद्रा । वदित्वाकरणउग्रं गेपिकश्च इदोमुखं
पत्थिदम्हि ।

राजा । किं च ।

चतुरिका । सा मे कल्यादा अतारा तरलियाडुदिआह दव्रीह
वसुमदीह अहं एव्य अड्डाउत्तस्स उवणाइस्संति मयल्लकारं गहि
दो ।

विदूषकः । दिदूआ तुमं मुक्का ।

चतुरिका । आव दव्रीह विडवत्तगं उत्तरीअं तरलिया मोचं
दि । ताव मए पिब्वहिदो अत्ता ।

गिन्वृत्तापुंसव्याणां स ज्ञात्रा सुणीयदि ।

राज्ञा । ननु गर्भः पित्र्यं रिक्त्यमर्हति । गच्छ । एवममात्यं
ब्रूहि ।

प्रतीक्षारी । जं देवो आणाव्यादि । इति प्रगिता

राज्ञा । इति तावत् ।

प्रतीक्षारी । इत्यमिह ।

राज्ञा । किमनेन संतांतरस्ति नास्तीति ।

येन येन विमुञ्च्यते प्रताः स्मिन्धन बन्धुना ।

स स पापार्हतं तासां दुष्यन्त इति धुष्यतां ॥ १५० ॥

प्रतीक्षारी । एवञ्च एतां घातयामास इत्यर्थः । निष्कृष्य पुनः पवित्र्य । काते
पवुर्दं विद्य अरिणान्दिदं देवस्स सासणां ।

राज्ञा । ईर्ष्यायां च निष्कृष्य । एवञ्च भोः संततिच्छेदनिर्वत्तम्बानां
कुलानां मूलपरम्परासन्निधौ संपदः परमुपतिष्ठन्ति । ममाप्यन्ते पुरुवंश
श्रीकाल इवोत्पत्त्या भूर्त्वंवृत्ता ।

प्रतीक्षारी । पांडुरुदं अमङ्गलं ।

राज्ञा । धिक्कामपस्विताश्रयोवमानिनं ।

सानुमती । अमंसयं सारुं एव्य किम्यहं करिष्ये गिन्दिदो पोष
अप्या ।

राज्ञा ।

संरोपिते ऽप्यात्मनि धर्मपत्नी

त्यक्ता मया नाम कुलप्रतिष्ठा ।

कल्पिष्यमाणा मरुते फलाय

वसुधरां काल इवोत्पत्तीनां ॥ १५१ ॥

सानुमती । अपरिच्छिन्ना तां दे संदरी भविष्यति ।
चतुरिका । अथ । इमाणा सानुमतीस्तानां विष्णु
व्यग्रो भूतः । ॥ अस्मागदु मेरुपारिच्छन्दादा अन्नं वातव्यं गोपद
अ आअन्हेदि ।

प्रतीक्षारि । सुदृष्टु भवति । ॥ १०॥

राजा । अद्या दयसाय संशयमादिकाः पिण्डभाजाः । कुतः ।

अस्मान्परं तल पथाभुतिसंभूतानि

को नः कुल निवपन्नां निमच्छर्त्तित ।

नूनं प्रसूतिविकल्प मया प्रमिता

धाता-वृणोऽगुदकं पितरः पित्रां ॥ ११॥

इति गोहमणम् ।

चतुरिका । अथ । इमाणा सानुमतीस्तानां विष्णु

सानुमती । इती इती । सदिक्त्वं दीव व्यवधानाशमण है
सां अन्धआर्द्रासं अणुर्दादि । अर्द्रं द्वाणि एव्य पिच्युदं करमि ।
अर्द्रा । सुदं मर सउन्दलं समस्सासअन्तीर मेरुन्दताणणीर मुका
दा । अमाणाओसुया देवा एव्य तद अणुर्चिदरसात्त । अर्द्र अर्द्र
रेण अमपदिर्माणं भूत आहर्णादरसादत्ति । ता ण ज्ञत्तं कालं
पडिप्रालिडुं । ज्ञात्र इमाणा व्युत्तन्ताण पिअसादु समस्तांसमि ।

इत्युद्गन्तकं निवपन्ता ।

नपथ्ये । अथ । इमाणा सानुमतीस्तानां विष्णु

राजा । अद्या दयसाय संशयमादिकाः पिण्डभाजाः । कुतः ।
अत्र भोः ।

प्रतीक्षारो । परिच्छाद्य देवा संसाग्रगृहं वयस्सं ।

राज्ञा । केनात्तगन्था माणवृत्त ।

प्रतीक्षारो । आदृष्टव्येण सत्ताण अदिकामिग्र मेकप्यटि
च्छन्दस्स वासादस्स अगमार्गं आराव्यत् ।

राज्ञा । यथा भा तावत् । ममापि सधैरभिभूयते गृह्णा ।
प्रतीक्षारो ।

अहन्वहन्वात्मन एव ताव

ह्नातुं प्रमादस्त्वलितं न शक्यं ।

प्रतीक्षारो कः केन पथा प्रयाती

त्वशेषतो अदितुमस्ति शोभे ॥ १५३ ॥

नपथ्ये । भा वयस्स । अविह अविह ।

राज्ञा । अविह न पथ्या । न भनव्यं न भनव्य ।

नपथ्ये । पथ्याय पथ्याय कदा वा भादस्स । एत मे वाव प
भयगादमिरादं उवा विग्र तादृभदं करदि ।

राज्ञा । पथ्याय । धनुस्तावत् ।

पथ्याय शोभे

यवनी । भद्रा । एदं कथावावसदिदं परामणा ।

पथ्याय शोभे

नपथ्ये ।

एव तामभिनवकादशाणितार्थं

शार्दूलं पथ्याय कृन्म चष्टमानं ।

आर्त्तानां भयभयनगुमातधन्वा

दुष्टतामस्तत्र शरणं भयविहारी ॥ १५४ ॥

रक्षा । यत् । कथं नागैर्व्योद्विजात । त्वं कृपायाशन । त्व
मिदानीं न भविष्यसि । प्राङ्मुखः त्वत्पत्नी । मां गान्धर्वादिभिः ।
प्रतीक्ष्यतीति । इदं इदं हेतुः ।

। भवेत् सत्यमप्यप्यसि

राजा । गान्धर्वादिभिः । कथं भविष्यति ।

नेपथ्ये । अत्रिहं गतिः । अहं अन्तर्गतं विवर्तयामि । त्वं गुं
णा विवर्तयामि । विद्वान्महर्षिदा गुरुया विष्णुः त्वं गान्धर्वादिभिः ।
संवृत्ता ।

राजा । भोस्तिरस्कारिणीर्गतिः । भदायं शस्त्रं त्वं दृष्टवान् । एष
तन्निधं संदध ।

गो दृष्टिप्राप्तिः कथं त्वं दृष्टं रक्षति च द्विजं ।

हंरात्रि किं क्षीरमादत्त तन्मित्रा तद्विद्वत्पुत्रः ॥ १५५ ॥

। न त्वं गुरुः

तत्तं पतिप्राप्तिः विद्वत्पुत्रपुत्रः गान्धर्वः

गान्धर्वः ।

कृताः शरव्यं क्षीरिणा तवाम्बराः

शरव्यं तेषु विरुज्यतामिदं ।

प्रभादभाभ्यान् सतां सुहृद्वज्रं

पतति चक्षुषि न दारुणाः शराः ॥ १५६ ॥

राजा । शरव्यपतंजनः । अये गान्धर्वः । स्वागतं महेन्द्रसारथि ।

प्रक्षिपः

विद्वत्पुत्रः । अहं त्वं इदं विद्वत्पुत्रं गान्धर्वः । सो दृष्टिप्राप्तिः सा
अदृष्टा अदृष्टान्दोऽयदि ।

मानलिः । मानलः आयुष्मन् । श्रयतां । यदस्मि दूरिणा भव
तग-शानं प्रपित् ।

राजा । अन्वक्षिता अस्मि ।

मातालः । अस्ति मातानिमिप्रसूतिर्दृष्टा नाम तानवगण ।

शान । अस्ति श्रयपूर्व नया नारदात् ।

मानलिः ।

साव्युस्त स किञ्च जनक्रतोर्दृष्ट

स्तस्य तं गणशिरसि स्मृता निरुता ।

उच्छेत्तं प्रपयति यम सप्तमपि

स्तमैशं तिमिरमपावरोति चन्द्र ॥ ११० ॥

सं भवानात्तशस्त्रं दृष्टमिदानीं तमेन्द्रायमाह्वयं विज्ञाय पतिष्ठतां ।

राजा । अनुगच्छतोऽद्मनया मधवतः सभावनया । अथ मा
दृष्टं प्रति भवता किमेव प्रयुक्तं ।

मानलिः । तदपि कथ्यते । तिमिरविधागतादपि मनःसंतापान्
ध्मान्मया विल्लब्धो दृष्टः । पश्चात्कोपयितुमानुभवतं तथा कुन्वान
म्मि । कतः ।

त्वत्वाते च तान्धनां अग्निर्विप्रकृतः पद्मः पाणं कुरुते ।

प्रायः स्वं गच्छमानं क्षात्रप्रतिपद्यते हि जनः ॥ १११ ॥

राजा । मानलिः । वयस्य । अनतिक्रमणीया दिवस्पतेराशा । तद्
त्र परिगतार्थं कृत्वा मदधनादप्यावशिष्टं दृष्टिः ।

त्यज्यतिः केवला तावता रिपान्धितं प्रजाः ।

अधिर्यागदमन्याम्मन्कर्माणा व्यापृतं धनुः ॥ ११२ ॥

इति ॥

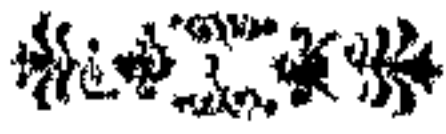
विद्वत्कः । नो भवेत् श्रामोदितः ।

मालिनिः । श्रामोदितः श्रामोदितः ।

श्रामोदितः श्रामोदितः

श्रामोदितः श्रामोदितः

श्रामोदितः श्रामोदितः



ता प्रसिद्धा राजा गुणाधरा ॥ १११ ॥ तल्ल

राजा । मातल्ले । अनुद्दिननिदेशो ऽपि मयवतः सत्क्रियाविशेषाद्
मुपयुक्तमिव्यात्मानं समर्थये ।

मातल्लिः । नमः । आयुष्मान् । उभयमप्यस्तितोषं समर्थये ।

प्रत्यमोपकृतं मस्त्यतः

प्रतिपत्त्या त्वम् मन्यते भवान् ।

गणायत्यन्वदानतोपितो

भवतः सो ऽपि न सत्क्रियागुणान् ॥ १६० ॥

राजा । मातल्ले । मा मेधं । स खलु मनोरथानामगमिर्वि
सदानावसारनाकारः । मम हि दिव्यौकसां यमज्ञमर्थासनापवाशतस्य

अस्मत्प्रार्थनमस्तिकस्थं

जयसमुदीक्ष्य कतस्मितेन ।

यामुद्वेगतोरिचन्दनाद्वा

मन्दारमाला हरिणा पिनदा ॥ १६१ ॥

मातल्लिः । किमिव नामायुष्मानमरेथराद्वार्हते । पश्य ।

सुगन्धस्य हरिर्भयैः कृतं

त्रिदिवमुद्वेगतदनवकाठकं ।

तत्र शरैरपुनान्तर्दधति

पुरुषकेशरिणाश्च पुरा ॥ १६२ ॥

राजा । अत्र प्लुतं शनत्राणैस्त्व मर्दिताः ।

स्थितिं कर्मसु मरुत्स्वर्ग्यं पानवाङ्माः

ममावनागुणमन्त्राकं तमः ॥

किं वामविश्वदराणास्तमसां विभेना

१ ॥ तं चतुर्दशं सारणं धीरुनाः सारिष्यत ॥ १६३ ॥

मातालिः । सदृशमन्त्रितत् । सायनतर्मन्त्रेण आगुण्यम् । १६३ ।

पश्य नाकपृष्ठगतस्य सागाव्यमात्मान्यशनः ।

त्रिचक्षुर्गणैः सुरसुन्दरीणां

वाणरिभा मलयन्ततांशुकेषु ।

संचिह्न्य गीतनाममर्थवन्ध

दिवौकमस्त्वध्वारतं लिखति ॥ १६४ ॥

राजा । मातालि । असुरसंप्रहारात्सुफेनं पूर्ववृद्धिर्दिवमाधरादृता न
न्याक्षिनः स्वर्गमार्गः । कतरारामन्मैरुतां पथि वतीमदं ।

मातालिः ।

त्रिमातसा अर्हति या मगनप्रतिष्ठा

व्यातींषि वर्तयति च प्रविभक्तार्णमः ।

तस्य द्वितीयद्विर्विक्रमान्मन्त्राभ्यं

वायोरिमं परिवहस्य वदन्ति मार्ग ॥ १६५ ॥

राजा । मातालि । अतः प्लुतं सवाङ्गानःकर्णो ममाक्षरमा
प्रसीदति । सायनतर्मन्त्रेण मध्वपद्वीमवतर्गो स्वः ।

मातालिः । कथमवगम्यते ।

राजा ।

अयमरविर्वरेभ्यश्चातर्कानिष्यतां

दीर्गगिरचिरभासां नेत्रसा चानुत्तिष्ठे ।

गन्मयसि धनानां वारिभिराश्रया

विश्रुनयति रघुस्तं शीकरलिङ्गनमिः ॥ १६६ ॥

मातान्तिः । तन्मादागुष्मान्स्त्राधिकारभूमौ वर्तिष्यते ।

राजा । अथा चरन्त्या वृगावतरणादाश्चर्यदर्शनाः संलक्ष्यते मनुष्य

लोकः । तन्मा हि

शैलानामवरोहतीति शिखरादुन्मज्जतां मेदिनी

पार्श्वभ्यन्तरलीनतां विजृहति स्कन्धोदयात्पादयोः ।

संतांस्तनुगात्रनष्टरातिन्ता व्यक्तं भजत्याप्रगाः

वेनाप्युत्तिष्ठतव पश्य भुवनं मत्पार्श्वगानीयत ॥ १६७ ॥

मातान्तिः । माधु दृष्टं । मधुमान विलोका । अहं उदारमणीया प्रायस्वी ।

राजा । मातान्ति । कनमो ज्यं पूर्वापरसमुद्रावगाढं कनकरस निस्पन्दी सांध्य ईध मेघपरिधः मानुमानालोकगत ।

मातान्तिः । आयुष्मन् एष ज्वलु हेमकृता नाम विंयस्वरूपयव लम्बापसां मिदित्तत्रं । पश्य ।

स्वायंभुवान्मरीचयः प्रचभवे प्रजापतिः ।

सरासुरगुरु सा एव सपत्नीस्तपस्यति ॥ १६८ ॥

राजा । तेन कानातिक्रमणीयानि अयांसि । प्रदर्शिताकल्प भग वरं गन्मिच्छामि ।

मातान्तिः । प्रथमः कल्प ।

मातृगणपति ॥

राजा । तत्रापि ।

उपोदशब्दा न गृह्यन्ते मयः

प्रवर्तमानं न च दृश्यते राजा ।

अभुतलस्पर्शतया नित्यतः

सत्वावतापि अपि न च नित्यतः ॥ १०१ ॥

मातलिः । एतावानिष शतक्रतोरामुष्मत्तश्च विष्णोः ।

राजा । मातलि । कन्तर्भाभिन्नेषु मारीयाधुन ।

मातलि । तत्रापि ।

कन्तर्भाभिन्नेषु मारीयाधुन । संदृष्टमप्यत्र

काण्डे दीर्घालिनाप्रतानयत्तुय । नात्यर्थसंयोगितः ।

असंख्याय शकुलानिर्दिष्टं विद्यत्तयामण्डलं

यत्र दृष्टारिवाचस्यो मुनिस्माद्यस्यैव विद्यं स्थितः ॥ १०२ ॥

राजा । नमस्तु वाटतयस्य ।

मातलिः । तत्रापि अपि एव कृत्वा । महाराज । एतावदितिपरिवर्धि

समर्थं तुल्यं ज्ञापयताम्यः प्रविष्टो मयः ।

राजा । स्वर्गादधिकतरं निर्वृतिमान् । अमृतद्वयमिव त्वया
अस्म ।

मातलिः । एषु एव गणिते । अवतारव्यापुष्मान् ।

राजा । अत्रापि । मातलि । भवान्कथमिदानीं ।

मातलिः । स्यादिति मया रयः । यमवतारान् । तत्रापि ।

इत आगुष्मन् । तत्रापि दृष्टव्यामत्रभवतामृषोणां तयोश्च नभूमयः ।

राजा । ननु विस्मयादधत्तां तयागि ।

प्राणानामनिलेन वृत्तिर्हस्ता यत्कल्पवृक्षे न

तथि काष्ठमपकारणकृषिं यमार्थैकक्रिया ।

आनं रत्नांशलातन्तुं विवृणोमीमोनिधौ मयमो

यत्काडसि तयोर्गिरा न्यमनगतास्मिन्तुप्रत्ययमो ॥ १८१ ॥

मानसि । असाध्याः प्रयत्नं महता प्रायेणा । यत्कल्पवृक्षे न

अयं वृद्धशाकल्य । किमनुतिरति भवतांन्मारीका । विं ब्रवीति ।

दाज्ञायणा पतिव्रताधर्ममधिकृत्य पृथस्तगत्वे मन्त्रिपत्नीसिद्धतां यय
यतीति ।

राज्ञा । यथा कल्पवृक्षे । अथ । प्रतिपत्त्यावकाशं यत्कल्पवृक्षे न

मारुच्यः । यथा कल्पवृक्षे । अस्मिन्तुप्रत्ययमो तत्कल्पवृक्षे न

यान् । यात्रधामिन्द्रगुरवे निवस्यतां पत्नीः अपि नयामि ।

गता । यथा भवतांन्मारीका ।

मानसि । अणुमानं । माध्याम्यकं ।

राज्ञा । यथा कल्पवृक्षे ।

मनारण्ये नाशम किं चाक्षो म्प्रमदस वृथा ।

पूर्वावधारितं श्रयो दृष्टं किं परिवर्तत ॥ १८२ ॥

नेप्रत्ये । यात्र धामिन्द्रगुरवे निवस्यतां पत्नीः अपि नयामि ।

पात्तां दे ।

राज्ञा । यथा कल्पवृक्षे । अस्मिन्तुप्रत्ययमो तत्कल्पवृक्षे न

मारुच्यः । यथा कल्पवृक्षे । अस्मिन्तुप्रत्ययमो तत्कल्पवृक्षे न

यान् । यात्रधामिन्द्रगुरवे निवस्यतां पत्नीः अपि नयामि ।

गर्भपीनस्तन भागुरामर्दितद्वंशरं ।

प्रकृतिरितं सिद्धिंशुं यत्कल्पवृक्षे न ॥ १८३ ॥

तत्र पाणि ॥ १०१ ॥ अथवा ॥ १०२ ॥

आत्मा । जिम्मा गिद । द्वादि र भाण्डस्य ।

प्रथमा । अविणीदि । किं णो अपर्णीणांन्यसमाप्ता सन्नापि
विषयधरसि । दत्ता वदुद र संग्रहो । दार्णव्य उमिताणा म
अदगार्णोति किदणामदेयाणि ।

सत्ता । चिं नु भवन् आत्मा अस्मिन्नारसा इव पुन विस्थिति मे
मनः । नूनमनपत्यता मां चन्मलपति ।

द्वितीया । दत्ता म् कसरिणी तुम लङ्गदि । अर मे पुतत्रं
॥ मुञ्चति ।

आत्मा । अन्तः । आत्मप्रभु भीदुम्कि । अथवा अन्तः

तथा ।

अकलस्तत्रसो धीशं आत्मा अय प्रतिगति मे ।

म्फुलिङ्गावस्थया वद्विग्धापत्त इव स्थित ॥ १०४ ॥

पश्चात् । वच्छ । इदं आत्ममिदन्दमं मुञ्च । अथवा इदं काल
॥ अर्थ दादस्मि ।

आत्मा । वाकिं । ददिं णो । इति दत्तं पसारयति ।

दत्ता । कर्षं चकवर्तिलक्षणाप्रयत्नेन धारयति । तथा कवस्थ

प्रार्णव्यवस्तुप्रणयप्रसारितो

विभाति आत्मप्रयिताङ्गुलिः क्व ।

अलक्ष्यपत्रान्तरांगद्वारागया

नवापसा भिन्नमितिकपङ्कजं ॥ १०५ ॥

द्वितीया । भुञ्जते । ण सक्ता दसो वायामेनेण विरमावदु ।

गच्छ समं । गग वोरु उदु मक्काडेयस्म इमिक्मारयस्म वाणांति

आश्वयुज्य मसिन्. २३६ ॥ १७७ ॥

रक्षा । अतः इदं बलं कथा मामव लब्धाकरोति । यदि
तावदस्य शिष्यान्मत्त मातरं पृच्छामि । अथवा । तर्ह्यनार्यः परशः
अवकाशः ।

पञ्चमः गच्छेत्

तापसी । सद्यः । सद्यः । सद्यः । सद्यः ।

वाल्मीकिः । सद्यः । सद्यः । सद्यः । सद्यः ।

उभे । सद्यः । सद्यः । सद्यः । सद्यः ।

द्वितीया । सद्यः । सद्यः । सद्यः । सद्यः ।

सद्यः ।

सद्यः । सद्यः । सद्यः । सद्यः ।

सद्यः । सद्यः । सद्यः । सद्यः ।

सद्यः ।

वाल्मीकिः । सद्यः । सद्यः । सद्यः । सद्यः ।

प्रथमा । सद्यः । सद्यः । सद्यः । सद्यः ।

सद्यः ।

सद्यः । सद्यः । सद्यः । सद्यः ।

सद्यः ।

उभे । सद्यः । सद्यः । सद्यः । सद्यः ।

सद्यः ।

सद्यः । सद्यः । सद्यः । सद्यः ।

प्रथमा । सद्यः । सद्यः । सद्यः । सद्यः ।

सद्यः । सद्यः । सद्यः । सद्यः ।

सद्यः । सद्यः । सद्यः । सद्यः ।

सद्यः ।

सद्यः । सद्यः । सद्यः । सद्यः ।

राजा । भवतीभ्यः कर्त्तव्यम् । प्रभतीकृता । प्रक्रिया ।

उभ । अण्यथा ।

राजा । ... कश्चिन्मिदं मया मया न भवति ।
नर्तन । ...

ललिया । ... । इति । ... ।
... । ...

बालः । ... ।

राजा । ... ।

बालः । ... ।

राजा । ... ।

...

शकुन्तला । ... ।
... । ... ।
... । ... ।

राजा । ... ।

...

...

...

...

शकुन्तला । ... ।
... । ... ।

बालः । ... ।
... । ... ।

राजा । प्रिये । क्रीडामपि मे त्वयि प्रमुक्तमनुकूलपरिणामं संव-
तं । मदहर्षमदन्ती त्वया प्रत्याभिज्ञातमात्मानं पश्यामि ।

शकुन्तला । मातामहं हि श्रद्धा । समस्तस्य समस्तस्य । परिश्रुतम-
न्तर्यामि आणुग्रहिदग्निं देव्येण । यज्जडोक्तं एतौ ।

राजा । प्रिये ।

स्मृतिभिर्नमोऽहंतामसो दिव्या प्रमुक्तं स्थितासि मे सुमुखि ।

उपरागात्ते शशिनः समुपगता राक्षिणी योगं ॥ १८१ ॥

शकुन्तला । इदं इदं अज्जडोक्तं । इदं वाक्यं यत्पुनश्चिन्तितं ।

राजा । सुन्दरि ।

आण्णम प्रतिषिद्धं अपि त्वयशब्दं जितं मया ।

यत्ति दृष्टमसंस्कारपादलोक्ष्युर्दं मुखं ॥ १८२ ॥

चान्नः । अज्जडो । को एतौ ।

शकुन्तला । अज्जडो । इदं भाग्येऽग्राहं पुच्छेहि ।

राजा । अज्जडो । अज्जडो । अज्जडो ।

राज्ञो रुदमात्प्रत्यादशव्यन्तीवर्गपिनु ते ।

किमापि मनसः समोक्तं मे तदा त्वत्तत्त्वानभूत ।

प्रचलन्तमसामवंप्रायाः शुभेषु हि वृत्तयः

अजमपि शिरस्यन्धः क्षिप्तां धुनं त्वयि शङ्कया ॥ १८३ ॥

शकुन्तला । अज्जडो अज्जडो । एतौ मे सुश्रुतिश्रुतिश्रुतिश्रुति
पुराहितं तस्य दिव्यरसु परिणाममुक्तं आसि । ज्ञेयं साणुकोसादि
अज्जडो गद विरसो संवृत्तो । इति । अज्जडो कर्तुं अज्जडो
सुगरिदो दुक्त्वार्थं अज्जडो ज्ञेयो ।

राजा । उक्तं त्वया श्रुत्यः कथायथासि ।

मातृहन्मया सन्तु पूर्वभोजितस्ते

यो व्याप्यान्दुरधर परिधावमानः ।

तं तावदशक्तिरप्यवमावलाशमया

आप्यं प्रभृष्टं विमलानुशयो भवयं ॥ १८३ ॥

मि वीर्यमनुतिष्ठति ।

शकुन्तला । तावदां १८३ अज्ञातं । एतं तं अशुक्लीयं ।

राजा । अस्मादशुक्लीयोपलम्भात्तत्त्वत् स्मृतिरुपलब्धा ।

शकुन्तला । विसमं किं दे एषा । जं तदा अज्ञातस्स पसायगा
नाल दृष्टं आसि ।

राजा । तेन द्यूतसमवायचिह्नं प्रतिपद्यतां लता कुसुमं ।

शकुन्तला । ए मे विस्मयामि । अज्ञातं एव तां वाग्द ।

। ता वियोजि तासि ।

मातलिः । दिष्टा । धर्मपत्नीममार्गमन पुत्रमुपदर्शनं वायुणा
न्वर्धते ।

राजा । अमृतापादितव्याटुफलां मे मनोरथः । मातलि । न
एतत् विदितं ज्यमावपटनेन कृतात्ताः स्यात् ।

मातलिः । मया किमीश्वराणां पराजं । एवायुष्मान् । भग
वान्भारोवस्ते दर्शनं वचतरति ।

राजा । शकुन्तल । अवलम्ब्यता पुत्रः । तां पुरस्कृत्य भगवन्
द्रष्टुमिच्छामि ।

शकुन्तला । शिरोध्यामि अज्ञाततां सह गुह्यमीवं गतुं ।

राजा । अप्याचारुतयमगुह्यकानेषु । एवोहि ।

। गर्भं परिक्रामते ।

॥ ततः पश्चिन्मार्गित्या सार्धमागम्यो मारीचः ।

मारीचः । रागात्मवलोच्य । दक्षामणि ।

पुत्रस्य ते रगाजिरस्यममश्यामी

दुष्यन्त इत्यभिहितं भुवनस्य भर्ता ।

अपि न यस्य विनिवर्तितकर्म जातं

तत्कीदृमत्कलिशभाभरणं भर्तुः ॥ १८० ॥

अदितिः । संभावणीश्यामभाया मे आकिदी ।

मातलिः । आगुष्मन् । इति । पुत्रप्रोत्तिपिशुर्भन चनुपा दिवीक
मां पितरावागुष्मन्तभवत्ताक्यतः । तावुपसर्प ।

राजा । मातले । इति ।

१ - प्राङ्मूर्धादशधास्थितस्य गुणयो यत्तेजसाः कारणं

भर्तारं भुवनत्रयस्य सृष्टेः यद्यज्ञभागश्चर ।

यस्मिन्नात्मभूतः परोऽपि पुरुषश्चक्रे भवाणास्यदे

द्वन्द्वे दक्षमर्गोचिसंगर्भादिरे तत्सद्वृत्तात्तरं ॥ १८१ ॥

मातलिः । अथ विं ।

राजा । पणित्य । इमाभ्यामपि वासवानुयोज्यो दुष्यन्तः प्राण
मात ।

मारीचः । वत्स । चिरं जीव । पृथिव्यो पालय ।

अदितिः । वच्छ । अथदिर्हो कंहि ।

शङ्कलला । तारयसक्तिदा त्रां प्रादक्कण करेमि ।

मारीचः । त्वयं ।

आप्यण्डन्ममो भर्ता तन्मप्राणः सुत ।

आशीरन्ता वा ते वाग्या यन्ताप्य सार्धो भव ॥ १८२ ॥

अदितिः । तदिह । भक्त्या यदिमैव कश्चि । यत्रापि दोषाच्च
अच्छा इहग्रहणात्प्राप्तं दोषः । अत्रापि ।

१. २. अत्रापि यत्रापि ।

यार्थः । यत्रापि ।

दिक्ता शकुन्तला माधी सद्यःपि भवन् ।

अदा इति विधीयति । तदा तदा ।

राजा । भगवन् । प्रभाते कश्चि । तदादर्शनं । अतो ज्युः
वन् वी ज्युः । कतः ।

उदतिः । यत्रापि ।

अन्योन्याश्रयः ।

निमित्तनिमित्तकारणं क्रम

स्तत्र प्रभाते यत्रापि ।

माता । एव ।

राजा । भगवन् । इमाभाजाकारं वी । गान्धर्व्या विवादाविधि
नोपपद्य कश्चिचित्कालस्य अन्धगिरान्तितां स्मृतिशक्त्या प्रत्यक्षेण
ज्युः ज्युः । अन्धगिरान्तितां स्मृतिशक्त्या प्रत्यक्षेण
राजा । भगवन् । इमाभाजाकारं वी । गान्धर्व्या विवादाविधि
नोपपद्य कश्चिचित्कालस्य अन्धगिरान्तितां स्मृतिशक्त्या प्रत्यक्षेण
ज्युः ज्युः । अन्धगिरान्तितां स्मृतिशक्त्या प्रत्यक्षेण

१. यत्रापि ।

तस्मिन्नातिशयः ।

यत्रापि ।

स्तत्रापि ।

यत्रापि ।

मार्ग्यः । श्रूयतां ।

राजा । अवहितोऽस्मि ।

मारीचः । यदेवाप्सस्तार्थावतरणात्प्रत्यक्षवैलक्ष्यां शकुन्तलामा
ताय मनका दान्तायापीभुषिता । तदेव ध्यानाद्वमतोऽस्मि । ह्यो
मसः शपादिमं नवास्त्रं सद्धर्मचारिणो त्वया प्रत्यादिष्टा । ना
न्यं ज्ञेयं । स चाममद्वलीयकदर्शनात्प्रमानः ।

राजा । पक्ष्मं एषं त्वचनीयान्मृज्जोऽस्मि ।

जगन्नाथ । राजा । विदितं । अवतरणप्रसङ्गात् । अत्र उक्तं ।
मं ॐ भक्तं शिवायं गुह्यं । अहं । पत्तो मरु स किं नात्रो
त्तरं सुगुणद्विप्रश्चरं विदिदो । इदो सहीहिं संदिष्टुम्हि । भक्तु
णो अङ्गुलाग्रं दंसद्व्यंति ।

मारीचः । वत्स । चरितार्थासि । सद्धर्मचारिणं प्रति न त्वं
या मन्युः कार्यः । पश्य ।

शापारोप प्रतिकृता स्मृतिरित्युक्ते

भर्तृगणितभाषा प्रवृत्ता न शब्दः ।

ह्या न मूर्हति मत्वापहृताप्रसादे

श्रुदे तु दर्पणतले सुलभावकाशा ॥ १११ ॥

राजा । भगवन् । अत्र प्रवृत्ते ये केषां प्रतिष्ठा । राजा बालं पश्य

गुह्यं

मारीचः । तथामाविर्गमनं चक्रवर्तिनमग्रगच्छन् भवान् । पश्य ।

रत्नानुदातरितगतिना तीर्जज्ञानधिः

यथा सादीना अयति तन्मृगप्रतिष्ठा ।

संज्ञा-विशेषः

पुनर्जातकालात् ॥१॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमः ॥

ਸਤਿਨਾਮੁ ॥ ਗੁਰਪ੍ਰਸਾਦਿ ਕਰਮੀ ਜੀ ॥ ਭਗਤਿ ਮਨਮੋਹਨੀ ॥

अद्वैतः । अथवा । इत्यदि दान्त-विचारः । यदा तत्त्वोच्यं दा
व सुदान्तार्था मया । अद्वैतान्तरा मया आ इति शब्देन उ
क्तं तुलसी विद्मः ।

शुद्धि, सत्ता । शुद्धता, भाव, ज्ञान, मोक्ष । ३५ । ३६ ।

मार्गिच. । तपःप्रभावात्प्रत्यक्षं मन्त्रविद्यं तं निष्कृतः ।

राजा : अतः मेवम् उपपात्तकृतं माणि ।

गर्भितः । तदापराध विनाशमान प्रहृत्य । १ ० ३६ ५२
मोः ।

शिष्यः । भगवन् । अभामि ।

माहीचः । गाताय । इहानीमित्य विन्हायमा मत्ता मम वचनात्
 अभर्त काताय प्रियमाविहय । मणा । पृथ्वता प्राकृत्यन्ता तन्काय
 निवृत्ता । सुनिमता इहयता । तीमृदामति

शिष्यः । भद्रावयानि भगवान् । . १०८ (१०८)

गार्हपत्यं । नक्त्यं । त्वमायं मन्त्राप्रन्यदास्तुतः सख्युसाख्यण्डलास्य
रश्ममारुह्य ते सवधानो प्रतिदम्ब्य ।

सत्ता । प्रज्ञाप्रयति भगवान् ।

महर्षिः । प्रायः च ।

तत्र भवतु चित्तं प्राज्ञः प्राज्ञः प्राज्ञः

त्वमापि चित्तलायस्तः स्वार्गणः प्रीणयस्व ।

दुग्धशतपरिवर्तानिचमन्यान्त्यकृत्य

नैमित्तिकमुपवृत्तां प्रान्ताग्रहज्ञाधनीयैः ॥ ११३ ॥

राज्ञा । भगवन् । यथाशक्ति श्रेयसा धतिष्ये ।

मारीचः । वत्स । किं ते भूयः प्रियमुपवृत्तां ।

राज्ञा । अतः परमपि प्रियमस्ति । तद्विह भगवान्निग्रहं कर्तव्यं
वृत्तिः । तदीदृशस्य भवत्वव्ययं ।

प्रवृत्तां प्रकृतिरुत्ताय पारित्यः

समस्तस्य पारित्यस्य भवत्वव्ययं ।

भर्माप व दपयत् नीलालोहितः

पुनर्मयं परिगुलशक्तिरात्मगुः ॥ ११४ ॥

इति सप्तमोऽङ्कः

॥ सप्तमोऽङ्कः ॥

॥ समाप्तमद्वैतानन्दशकुन्तलं नाम नाट्यं ॥

॥ शुभं भूयात् ॥

